Chap-6

षष्ठम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त समानान्तरता तथा अप्रस्तुत विधानमूलक भाषिक प्रयोग

भाषिक समानान्तरता

1. समशब्दीय आवृत्ति
2. समवाक्यांशीय आवृत्ति
3. समवाक्यीय आवृत्ति
4. समानान्तर वाक्यांश
5. समानान्तर वाक्य
6. आर्थीय समानान्तरता
7. निरर्थक आवृत्तिमूलक शब्दीय समानान्तरता

अप्रस्तुत विधान से तात्पर्य

1. रचनापरक अप्रस्तुत विधान

   (i) विशेषण के रूप में, (ii) क्रिया-क्रिया विशेषण के रूप में

2. बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान

   (i) उपमा, (ii) रूपक, (iii) व्याज-स्तुति, (iv) अपकर्ष, (v) मानवीयकरण, (vi) उत्प्रेक्षा आदि ।

षष्ठम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त समानान्तरता तथा अप्रस्तुत विधानमूलक भाषिक प्रयोग

भाषिक समानान्तरता

समानान्तरता से तात्पर्य

पश्चिमी शैलीविज्ञान में समानान्तरता शब्द का प्रयोग पैरेलिज्म (Parallelism) के अर्थ के रूप में किया गया है।

"समानान्तरता का अर्थ है किसी भाषिक लक्षण या विधान की पुनरावृत्ति की नियमितता।"[1]

"समानान्तरता से आशय है किसी रचना में समान या विरोधी भाषिक इकाइयों का समानान्तर प्रयोग। इसमें समान भाषिक इकाइ की एक या अधिक बार आवृत्ति होती है अथवा दो या अधिक विरोधी भाषिक इकाइयाँ साथ साथ आती हैं। अर्थात् इसमें समान या विरोधी सन्तुलन होता है। और यह सन्तुलन समानान्तरता के कारण ही सम्भव होता है।"[2]

समानान्तरता समान और विरोधी दोनों ही प्रकार की भाषिक इकाइयों का एक साथ प्रयोग करके अपने कथ्य एवं उद्देश्य को प्रभावी बनाने का शैली वैज्ञानिक उपकरण है। समानान्तरता का प्रयोग अनेक रूप से किया जाता है। जैसे- (1) समशब्दीय आवृत्ति, (2) समवाक्यांशीय आवृत्ति, (3) समवाक्यीय आवृत्ति, (4) समानान्तर वाक्यांश, (5) समानान्तर वाक्य, (6) आर्थीय समानान्तरता, (7) निरर्थक आवृत्तिमूलक शब्दीय समानान्तरता आदि।

समानान्तरता व्यंग्य निबंध की भाषा का आवश्यक तथा महत्वपूर्ण शैलीय उपकरण है। व्यंग्यकार भावों की प्रखरता और आवेश की तीव्रता को व्यंजित करने के लिए व्यंग्य भाषा में समानान्तरता को संप्रेषित करता है। एक ही शब्द, वाक्यांश या वाक्य का बार-बार अथवा समानान्तर प्रयोग करके व्यंग्य को तीव्र एवं प्रखर बनाया जाता है। हिन्दी साहित्य में गद्य तथा पद्य में इसका प्रयोग मिलता है। लेकिन व्यंग्यकारों ने व्यंग्य-भाषा में आक्रोश तथा तीव्रता लाने के उद्देश्य से इसका प्रयोग किया है।

1) समशब्दीय आवृत्ति

जहाँ पर एक ही शब्द की पुनरूक्ति होती है उसे समशब्दीय आवृत्ति या समशब्दीय समानान्तरता कहते है। व्यंग्य निबंध में एक ही शब्द का बार-बार बलपूर्वक प्रयोग करके व्यंग्य को प्रभावशाली तथा प्रहारात्मक बनाया गया है। कुछ उदाहरण देखिए-

"जेबकरतों के सम्मेलन में वह कहेगा जेबकतरों पर ही देश का निर्माण निर्भर है। सरकार जेबकतरों को विकास के लिए पूरी कोशिश करेगी।"[3]

यहाँ 'जेबकतरों' के शब्द द्वारा देश में व्याप्त विसंगतियों की ओर संकेत किया गया है।

"ये राजनैतिक पदों, शासकीय पदों पर आसीन लोग, खाते-पीते सुखी लोग कहते हैं - शिक्षा का उद्देश्य जीविकोपार्जन या नौकरी पाना नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को चरित्रवान बनाना है - याने हमें इस शिक्षा में चरित्रवान बेकार, चरित्रवान भुखमरे, चरित्रवान चोर, चरित्रवान जेबकतरें मिलेंगे, चरित्रवान जीविका कमानेवाले नहीं मिलेगा। यही शिक्षा का सही उद्देश्य है।"[4]

"सुबह उठो तो अखबार में 'लाइकमाइण्डेड' बातचीत में, 'लाइकमाइण्डेड', रात के आखिरी रेडियो बुलेटिन में 'लाइकमाइण्डेड', सपने में 'लाइकमाइण्डेड'। सुबह चिड़िया चहकती है, तो लगता है कि ये सब 'लाइकमाइण्डेड' हो गयीं, जबकि वे यह खुशी जाहिर करती हैं कि अब उजाले में कीड़े बीनकर खायेंगे। गाय रँभाती है तो लगता है - यह 'लाइकमाइण्डेड' को पुकार रही है, जबकि वह घास की माँग कर रही है। कुत्ते एक साथ भौंकते हैं, तो भ्रम होता है कि ये 'लाइकमाइण्डेड' हो गये, मगर सिर्फ आशंका से पीड़ित होते हैं।"[5]

"क्या भारतीय प्रगति के संदर्भ में दिशा शब्द का उपयोग किया जाना चाहिए या नहीं? प्रगति कहीं से किसी दिशा में हो रही है या किसी दिशा से कहीं भी हो रही है। दिशा से दिशा में हो रही है अथवा कहीं से कहीं हो रही है? क्या दिशा कहीं है? क्या कहीं दिशा है?"[6]

"इन दिनों मिश्र-बन्धुओं की संख्या सहस्त्रों में है और वे देव और बिहारी तो क्या, उनकी नायिकाओं तक को उठा रहे हैं। जिस किसी पदार्थ को लीजिए उसमें मिश्रण किया जा रहा है और मिश्रण करने वाले इन विभूतियों को यदि मिश्र-बंधु नहीं कहेंगे तो क्या बाबू श्यामसुन्दरदास कहेंगे?"[7]

'मिश्रण' तथा 'मिश्र-बन्धु' शब्दों की समशब्दीय आवृत्ति द्वारा मिलावट करने

वालों पर व्यंग्य किया गया है।

"चापलूसी की जड़ में मक्कारी होती है। सच बोलने को अभी तक हमारे समाज में मक्कारी नहीं माना जाता। अतः मक्कारी से पैदा होने वाली चीज सच से पैदा होने वाली नहीं हो सकती। अर्थात्, जब तक झूठ की तरह सच बोलना भी मक्कारी का एक अंग नहीं हो जाता, जब तक सच बात कहना चापलूसी की परिभाषा में नहीं आ सकता।"[8]

मनुष्य की झूठ बोलने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"भीड़ व्यक्ति को पहचानती है, आदमी को नहीं। भीड़ की पहचान कभी प्रमाणिक नहीं होती। भीड़, भीड़ होती है। भीड़ की दृष्टि लेखक की दृष्टि से हमेशा अलग होती है। व्यक्ति को पहचानने या नहीं पहचानने में हमेशा भीड़ का एक स्वार्थ होता है। अपन तो लेखक है।इस भीड़ के लफड़े में क्यों पड़ें?"[9]

यहाँ भीड़ शब्द की अवृत्ति द्वारा मनुष्य की स्वार्थपरायण वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"चुप से बना है चुप्पी। चुप्पी याने कि सन्नाटा। यदि हम चुप रहेंगे तो सन्नाटा छा जायेगा। सन्नाटा ठीक नहीं होता। सन्नाटे से डर लगता है। सन्नाटा निराशा की ओर ले जाता है। इसलिए कुछ न कुछ बोलते रहो। सन्नाटे को तोड़ते रहो। आप अखबार देख लीजिए। बहुत से लोग केवल सन्नाटा तोड़ने के लिए ही बोल रहे हैं।"[10]

"गेहूँ है तो अमेरीका से रेडीमेड चला आ रहा है। मशीनें हैं ते वे रेडीमेड आ रही हैं। हथियार है तो वे रेडीमेड आ रहे हैं।" वह बोली, "आदत नहीं पड़ गई रेडीमेड चीजों की तो और क्या? भिखमंगे कहीं के।"[11]

'रेडीमेड' शब्द द्वारा विदेशों के सामने सदा झोली फैलाने की आदत पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"गांधीजी न हुए कोई हिंस्त्र बर्बर हो गया, जिससे बच्चे को डराया जा रहा है। पर बच्चा भोला है, बहक जाता है। उसे क्या पता कि यह बात गांधीजी के नाम से मेल खाती भी है की नहीं। जनता भी भोली है, गांधीजी के नाम से बहका दी जाती है और वह है कि बहक जाती है। जहाँ कोई टोटका नहीं चलता, वहाँ गांधीजी फिट कर दिए जाते हैं। देश को लूटने के लिए ट्रंप कार्ड। गांधीजी न हुए ताश का जोकर हो गए, जहाँ चाहा फिट कर दिया और माल अपने गल्ले में।"[12]

यहाँ 'गांधीजी' शब्द द्वारा गांधीजी के नाम से फायदा उठानेवालों तथा भारतीय

संस्कृति के गिरते मूल्यों पर प्रहारात्मक व्यंग्य किया गया है।

"मंच क्रांति दे देता है।
पर मंच रोटी नहीं दे पाता।
मंच राजनीति दे देता है।
पर मंच संस्कृति नहीं दे पाता।
मंच नेता दे देता है।
पर मंच कृतिकार नहीं दे पाता।"[13]

"कुलपति ने कहा कि सरकारी नोट भी एक प्रकार का सर्टिफिकेट है। दस रूपये का नोट दस रूपये का सर्टिफिकेट है। फर्क इतना ही है कि सौ की रोजगारी मिल सकती है, एम. ए. बी.ए. सर्टिफिकेट की नहीं। बी.ए. का सर्टिफिकेट फाड़ने वाले सौ का सर्टिफिकेट फाड़ना पसंद नहीं करेंगे। अत एव युनिवर्सिटी को चाहिए कि अपनी डिग्रीयों के सर्टिफिकेट में उन्हें उपयोगी बनाने के लिए परिवर्तन करें। जैसे रूपया भुनाया जा सकता है, वैसे ही यदि सर्टिफिकेट भी बेचे या भुनाए जा सकें, तो मजा आ जाए।"[14]

'सर्टिफिकेट' शब्द की आवृत्ति द्वारा शिक्षण क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"भाईजान! कृपा करके कुत्ते की याद मत दिलाइए, मेरा कुत्तों के साथ सांप-नेवले जैसा बैर है। मेरी हीर के कूचे में नाना प्रकार के कुत्ते मौजूद थे। जानवर कुत्तों के अतिरिक्त इंसानी कुत्तों की भी अजब बहार थी। जानवर कुत्ते के काटने पर कोई न कोई औषधि मिल जाती है परंतु इंसानी कुत्तों का काटा हुआ पानी भी नहीं मांग सकता! मेरी हीर को भी कुत्तों से सख्त नफरत थी। उसने कभी कोई ऐसी शर्त नहीं रखी थी कि यदि मुझे प्यार करना है तो मेरे कुत्ते को भी प्यार करो।"[15]

यहाँ 'कुत्ते' शब्द की आवृत्ति द्वारा जानवर से भी बदतर आदमी की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"अब एक किस्सा हो तो बयान करूं। यहां तो किस्से में किस्सा और किस्सा-दर-किस्सा है।"[16]

"सीमा बन्धन ऐसा भय पैदा करने में बड़ा सिद्ध-हस्त है। सीमा की सीमा नहीं, यह किसी चीज़ की हो सकती है - स्थान, काल, परिस्थिति की। रेलगाड़ी छूटने के समय की सीमा लीजिए। रेल छूट जाने का विचार आते ही मन में भय का

पदार्पण होता है और यह भय फिर आपके सभी कामों में जल्दबाजी पिरो देता है। यह चिट्ठी, यह फाइल, यह काम इतने समय के भीतर हो ही जाना जाहिए। यह सीमा मन में घुसते ही जल्दबाजी की शुरूआत हो जाती है।"[17]

"पार्लियामेन्ट में चुने जाने पर क्या क्या करेंगे यह बताते हुए ल्वायड जार्ज एक दूसरी मीटिंग में कह रहे थे, "मैं आयरलैण्ड के लिए होमरूल चाहता हूँ, मैं स्काटलैण्ड के लिए होमरूल चाहता हूँ, मैं वैल्स के लिए होमरूल चाहता हूँ ...।" एक सज्जन ने खड़े होते हुए कहा - "और में जहन्नुम के लिए होमरूल चाहता हूँ।" हंसी का शोर समाप्त होते ही ल्वायड जार्ज बोले - "प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश के लिए होमरूल मांगने का अधिकार है।"[18]

"अब जहर में भी मिलावट है। अब मिलावट की दुनिया है, हर चीज में मिलावट, हर बात में मिलावट और तो और सरकार में मिलावट, बच्चों में मिलावट, ज्ञान में मिलावट, धर्म में मिलावट।"[19]

यहाँ 'मिलावट' शब्द की आवृत्ति द्वारा समाज, देश, धर्म, राजनीति, शिक्षण आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"कहीं रास्ते में गन्ने के खेत दिखायी पड़ गये। यहाँ से वहाँ तक गन्ना ही गन्ना। किसके मुँह में पानी नहीं आ जायेगा। बस गाड़ी खड़ी हो गयी। अब गन्ना चूस लें तो आगे बढ़ें। गाडी तो रोज-रोज की है, ऐसा गन्ना तो रोज-रोज नहीं मिलता।"[20]

'गन्ना' शब्दीय आवृत्ति द्वारा मनुष्य की मुफ्त में खाने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"दरोगा तो दरोगा, क्या नसबंदी का दरोगा और क्या बाँट-बटखरों का दरोगा या आबकारी का दरोगा।"[21]

"मंत्रीमंडल मे सामिल होने को लोग मुख्यमंत्री से चिपक जाते हैं। चिपक गया तो घुस गया, नहीं चिपका वह सड़क पर ही रह गया। लेखक हो या लेखिका, संपादक से चिपके रहते हैं, वे सचित्र प्रकाशित होते रहते हैं। चिपकू बड़ा धैर्यवान होता है। राजीव गांधी से भी 'डीलक्स' किस्म के चिपकू चिपके रहे, जाने कब सीधी घड़ी आ जाय।"[22]

यहाँ चमचागीरी द्वारा अपना काम आसानी से करने की मनोवृत्ति रखनेवाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

"चंद्रशेखरजी भी 'भूतपूर्व' हो गए। वी. पी. सिंह पहले ही 'भूतपूर्व' हो चूके

थे। राजीव गांधी भी 'भूतपूर्व' हुए। 'भूतपूर्वों' का यह खेल सचमुच अभूतपूर्व है। अभूतपूर्व इसलिए है कि इतनी तेज़ स्पीड से 'भूतपूर्व' पहली बार हो रहे हैं इसलिए ये परिवर्तन 'अभूतपूर्व' है। ये तो वड़े लोग हैं, इनको कोई फर्क नहीं पड़ता। हम तो नहीं पर हमारी हाल ही में लिखी कविता 'भूतपूर्व' हो गयी।"[23]

"कुर्सी पद का प्रतीक है। कुर्सी-प्रेम ही पद-प्रेम है। पद-प्राप्ति पर पद के अनुपात से ही छोटी-बड़ी कुर्सी मिलती है अतः कुर्सी शब्द का प्रयोग ही अधिक होने लगा है। पद को लपकने के लिए चूहा-दौड़ चलती रहती है। योग्य, अयोग्य, बुद्धिमान, मूर्ख, धनवान, किसान आदि सभी कुर्सी लपक प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में 'कुर्सी ओलम्पिक' होते रहते है।"[24]

"खा कर पसरना और मार कर सरकना' कुछ लोगों का सिद्धान्त है। यह हजामत के मामले में भी स्वीकार्य है। हजामत बनाने की सिफत तब है, जब कि हजामत बने, लेकिन हजामत बनानेवाले का पता न चले, किया हो, लेकिन कर्ता गायब रहे। ऐसा न होने पर हजामत बनाने वालों की हजामत बनाने का पूरा अन्देशा रहता है।"[25]

'हजामत' शब्द की आवृत्ति द्वारा दूसरों को बेवकूफ बनाने के तरिके पर व्यंग्य किया गया है।

"क्यू में खड़ा रहना हमारी सबसे बड़ी राष्ट्रीय आवश्यकता है। दूध के डिपो से लेकर मंत्रियों के बंगलो तक, जहाँ देखिए क्यू ही क्यू नज़र आती है। देश में क्यू सम्प्रदाय जड़ें निरंतर गहरी होती जा रही हैं और हज़ारों-लाखों क्यू में खड़े है। ऐसी हालत में स्वयं को इन क्यूओं से अलग घोषित करना राष्ट्र विरोधी कार्य है। सारे देश का भविष्य इन क्यूओं और इन क्यूओं का भविष्य आप पर निर्भर करता है। मतदाता के दरवाजे पर पाँच साल में एक बार वोट माँगने वालों की क्यू लगती है और देश के हर कोने में मतदाता रोजाना क्यू में खड़ा रहता है।"[26]

देश में लम्बी हो रही 'क्यू' के संदर्भ में व्यंग्य किया गया है।

"घुसपैठ शौकिया भी होती है और प्रोफेसनल भी। घुसपैठ किसी की हाबी है और किसी धंधा। इसके अलावा भी घुसपैठ कभी होती है ब-दर्जाये मजबूरी। कोई अनजान दो भलेमानुस किसी गम्भीर चर्चा में निमग्न हो और तीसरे महाशय उनकी चर्चा में से दो चार शब्दों को कैय कर उनके बीच में ठुस जायें, यह शौकियाँ घुसपैठ का एक नमूना है।"[27]

"जनता के राज्य में जनता सुखी या परेशान नहीं रहेगी तो क्या राम-राज्य में रहेगी? जनता का ही राज्य, जनता के ही सेवक, उसी के प्रतिनिधि, जनता के ही वोट, जनता के ही नोट और जनता की ही परेशानियाँ।"[28]

"नमस्ते अधिकतम तो स्कूल या कालेजों में ही मिलती है। सम्भत: सबसे अधिक नमस्ते स्कूल के आध्यापकों को 'टिकाए' जाते हैं। उनके नमस्ते आगे, और नमस्ते पीछे होते हैं। वह अधिकतर आदर के कारण नहीं, डर के कारण नमस्ते को प्राप्त करते हैं। कालेजों में भी नमस्ते काफी सस्ती है। वस्तुत: बहुत से बूढे लोग तो यही सोचते हैं कि जब से उन्होंने कालेज छोड़े हैं, कालेजों में दो ही चीजें रह गई है। नमस्तेजी तथा प्रत्येक दिन हाथ मिलाना।"[29]

"जैसे और तनाव झेल रहा हू, वैसे यह तनाव भी झेलूंगा। त्योहार के समय वैसे भी तनाव कम नहीं होते। बच्चों को नये कपड़े सिलवाने का तनाव, पर्व के दिन अच्छे भोजन के लिए पैसे जुटाने का तनाव, नगर में पूजनोत्सव देखने के लिए पधारे अतिथियों के स्वागत का तनाव।"[30]

'तनाव' शब्द की आवृत्ति द्वारा मध्यम वर्गीय जीवन में व्याप्त पैसों की तंगी को व्यंजित किया गया है।

ऊपर्युक्त सभी उदाहरण समशब्दीय आवृत्ति / समानान्तरता के है। जिसके द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

2) समवाक्यांशीय आवृत्ति

जहाँ वाक्य में एक ही वाक्यांश, पदबन्धों या उपवाक्यों की पुनरूक्ति होती है, उसे समवाक्यांशीय आवृत्ति / समानान्तरता कहते है। इस प्रकार की आवृत्ति द्वारा व्यंग्य को आक्रोशपूर्ण अभिव्यंजित किया जाता है। इसके कुछ उदाहरण देखिए :-

"एक तरफ गोली चलती है, दूसरी तरफ से नापाम बम आबादी पर फैंक दिया जाता है - युद्ध में नम्बर दो हो रहा है। आदमी एक पार्टी के टिकट पर विधायक बनता है और फिर जिस पार्टी की सरकार बनने वाली होती है उसी में चला जाता है- राजनीति का नम्बर दो। भक्त मंदिर निर्माण के लिए चंदा करता है और उसमें से अपना गुसलखाना भी बनवा लेता है - धर्म का नम्बर दो। लड़का प्रेम करके लड़की से विवाह कर लेता है और अपने बाप को उसके बाप के पास दहेज मांगने भेज देता है - प्रेम नम्बर दो।"[31]

'नम्बर दो वाक्यांशीय आवृत्ति द्वारा युद्ध, राजनीति, धर्म, प्रेम आदि क्षेत्र में व्याप्त विडंबना पर प्रहारात्मक रूप से व्यंग्य किया गया है।

"मैं अपने खिलाफ नहीं बोला। डाक्टर सुब्रह्मण्यम् स्वामी नहीं बोले, चरण सिंह नहीं बोले, मोरारजीभाई नहीं बोले, अटल बिहारी बाजपेयी नहीं बोले, उनके मालिक बालासाहब देवरस नहीं बोले, पाँचो शंकराचार्य नहीं बोले, बलराज मधोक नहीं बोले, विजयाराजे सिन्धिया नहीं बोली। ये नहीं बोलनेवाले, बोलनेवालों से कम देशभक्त नहीं है।"[32]

"थ्रू प्रापर चैनल" जाओ। लौटो। वह "थ्रू प्रापर चैनल" समझा ही नहीं। वह उसे इंग्लिश चैनल अपनी "प्रापर चैनल" से कम चौड़ी है। सैकड़ों सालों की महेनत से हमारी वह "प्रापर चैनल" बनी है।"[33]

"मामूली आदमी की चाय में शक्कर कम हो रही है, दाल मे नमक कम हो रहा है, लालटेन में किरोसिन कम हो रहा है, अखबार में कागज कम हो रहे है। इसके किचन से वनस्पति गायब है। उसके बाथरूम में साबुन गायब है। सभी जगह समाजवाद की प्रतीक्षा से काम चलाना पड़ रहा है।"[34]

यहाँ वाक्यांशीय आवृत्ति द्वारा सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"अपने आदमी के बिना कुछ नहीं हो सकता। दाने-दाने पर अपने आदमी की मुहर है। अपने आदमी के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता, व्यापार तो फिर भी बडी चीज है। क्योंकि उसका सम्बन्ध आयकर वालों को बुत्ता देने से है, मैं तुम्हें एक मामूली घटना सूनाता हूँ, जिसका सम्बन्ध ज्यादा से ज्यादा ब्रिकी-कर से होगा।"[35]

"आँख का आना भी बुरा, जाना भी बुरा, उठना भी बुरा, बैठना भी बुरा।
यानी की तब उसे आँख आना कहते थे। कल तुम्हारी आँख आ गयी,
परसों टोले-पड़ोस के किसी तिसरे की आँख आ गयी।"[36]

"चेले के बल पर ही धर्मगुरू के आश्रम बनते हैं।
"चेले के बल पर ही राजनेता के मंत्रित्व बनते हैं।
"चेले के बल पर ही पारितोषिक के अधिकार बनते हैं"[37]

हर क्षेत्र में चेले की चमचागीरी होती है। इसी बात पर यहाँ व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है।

"हर आदमी को अपनी कमाई थोड़ी ही लगती है। गरीब चाहता है कि

"एकस्ट्रा" कमाई हो जाए तो पप्पू को कमीज के साथ हाफ पैंट भी सिला दे। मध्यमवर्ग का प्राणी सोचता है कि "एकस्ट्रा" कामाई हो जाए तो मैं .... ये सब कर डालूँ। अमीर सोचता है की "एकस्ट्रा" कमाई हो जाए तो बीवी की अलग मोटर हो जाए या नई प्रेमिका का खर्च निकल जाए।"[38]

यहाँ समवाक्यांशीय आवृत्ति द्वारा आमदानी से अधिक पैसा मिलने की आशा रखनेवाले मनुष्य की मन:स्थिति को व्यंजित किया गया है।

"पिटना और दुत्कारे जाना तो हमारी भी नियति है बंधु। हम मंदिर-मस्जिद नहीं बनाते, फिर भी पिटते हैं। हम घोटाले नही करते हैं पर पिटते हैं। हम सरकार गिराने की रिश्वत नहीं खाते हैं पर पिटते हैं। हम पिटते हैं क्योंकि हम वफादार है। हम पिटते हैं क्योंकि हम पीट नहीं सकते।"[39]

"शहरों में सरेबाज़ार लूट और हत्या की वारदातें आम हो गई हैं, तो उन्होंने फरमाया कि 'सब चलता है'. मैंने बताया कि यह देश इंजीनियरों और ठेकेदारों का स्वर्ग बन गया है, तो वे अपनी ही तत्परता से बोले कि 'सब चलता है'। मैंने कहा की भ्रष्टाचार का झरना ऊपर से नीचे तक बहता चला जा रहा है, तो उन्होंने सूचित किया कि 'सब चलता है।' मैंने बताया कि पटना में एक महिला ने पाँच बच्चों को जन्म दिया है, तब भी वे उसी सदासुहागन शैली में बोले कि 'सब चलता है।' वे बर्फी की तरह चौकोर सज्जन थे, लेकिन अपना यह छोटा सा वक्तव्य इमरती की तरह घुमावदार स्टाइल में प्रस्तुत करते थे।"[40]

"मिलावटी पदार्थ बेचनेवालों के भी निरीक्षक है, मिलावट करनेवालों के भी निरीक्षक है, विद्यालयों में पढ़ाई हो रही है अथवा नहीं, इसे देखने को भी निरीक्षक है, तोलने के बाट सही हैं कि नहीं इसके देखने के भी निरीक्षक है, किन्तु सब जगह दिया-तले अँधेरा है।"[41]

प्रत्येक क्षेत्र में जाँच के लिए निरीक्षक होते है, किन्तु भ्रष्टाचार हर जगह व्याप्त है। इसी बात पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

ऊपर्युक्त उदाहरण समवाक्यांशीय आवृत्ति के है। जिसके प्रयोग द्वारा व्यंग्य को प्रभावशाली बनाया गया है।

3) समवाक्यीय आवृत्ति

जहाँ एक ही वाक्य की बार-बार पुनरावृत्ति या पुनरूक्ति होती है। उसे समवाक्यीय आवृत्ति / समानान्तरता कहते है। इस प्रकार की समानान्तरता द्वारा

पात्रगत तथा परिस्थितिजन्य विसंगतियों को उभारा जाता है। जैसे -

लोगों की हाँ में हाँ करनेवालों की प्रतिक्रिया के रूप में समवाक्यीय आवृत्ति का प्रयोग इस प्रकार किया गया है।

लोग कहने लगे, "बड़े महान् थे। सात बार जेल गये थे।"

"क्या कहने हैं!"

"एक बार तो स्वतंत्रता-संग्राम में भी जेल गये थे।"

"क्या कहने हैं।"

"पीने में हंमेशा स्कॉच ही पीते थे।"

"क्या कहने हैं!"

"इसी सबमें तन्दुरस्ती बिगड़ गयी..... कर्ज हो गया।"

"क्या कहने हैं!"[42]

"धीरे-धीरे सचिवालय के सारे कोनों से एक ही बात सुनाई देने लगी, "हू इज़ अफ्रेड ओफ वर्जीनिया वुल्फ, हू इज़ अफ्रेड ओफ वर्जीनिया वुल्फ। बड़ा साहब जा रहा है विथ फेमिली। विथ फेमिली साहब जा रहा है। "हू इज़ अफ्रेड ओफ वर्जीनिया वुल्फ। एलिज़ाबेथ टेलर। एलिज़ाबेथ टेलर। सब जा रहे हैं। "हू इज़ अफ्रेड ऑफ वर्जीनिया वुल्फ। विथ फेमिली।"[43]

दूसरों पर अपना प्रभाव डालने के लिए अंग्रेजी फिल्म अपने परिवार के साथ देखते है। इस बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

अपने से बड़े अफसरों की हाँ में हाँ मिलानेवाले मनुष्य की चापलूसीभरी प्रवृत्ति पर समवाक्यीय आवृत्ति द्वारा किए गए व्यंग्य का उदाहरण देखिए -

"इस खेत में तो इल्लियाँ नहीं हैं।" बड़े अफसर ने पूछा।

"जी नहीं है।" छोटा अफसर बोला।

"कुछ तो नज़र आ रही हैं।"

"जी हाँ, कुछ तो हैं।"

"कुछ तो हमेशा रहती हैं।"

"जी हाँ, कुछ तो हमेशा रहती हैं।"

"खास नुकसान नहीं करतीं।"

"जी, खास नुकसान नहीं करतीं"

"फिर भी खतरा है।"

"खतरा तो है।"

"कभी कभी बढ़ सकती हैं।"

"जी हाँ, बढ़ सकती हैं।"[44]

"सारा आप्लीकेशन किदर गया?"

"किदर गया?"

"किदर गया?"

"किदर गया?"[45]

"इधर जनमोर्चा आ गया है क्या?" मैंने कहा।

"नहीं मालूम।" वह बोला।

"रामधनजी आए थे इधर?"

"नहीं मालूम।"

"इधर काँग्रेस पार्टी में फूट नहीं हुई?"

"नहीं मालूम।"

"काँग्रेस भवन में ताला लगा या नहीं?"

"नहीं मालूम।"[46]

"इस प्रगति में कमल आवाज देता, 'कपड़ा, तुम कहाँ हो?, मकान, तुम कहाँ हो? दवा, तुम कहाँ हो? शिक्ष, तुम कहाँ हो? किरासिन, तुम कहाँ हो? चरित्र, तुम कहाँ हो? नीतिमूल्य, तुम कहाँ हो? संस्कृति-कला, तुम कहाँ हो?' और वे सब ही जवाब देते हैं, 'तोंदवाले दुकानदार से पूछो, वोटवाले नेता से पूछो।"[47]

इस प्रगति के युग में मनुष्य की मूलभूत चीज-वस्तुएँ समाज में गायब हो गई है। इसका जिम्मेदार आज के भ्रष्टाचारी नेता तथा दुकानदार हैं। इसी तथ्य को यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

ऊपरोक्त तीन प्रकार की आवृत्ति में शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों की पुनरूक्ति की समानता दृष्टिगत होती है। अर्थात् एक ही शब्द, वाक्यांश तथा वाक्यों की बार-बार पुनरावृत्ति द्वारा व्यंग्य को प्रस्तुत किया गया है।

4) समानान्तर वाक्यांश

वाक्य में समान या विरोधी वाक्यांशों का समानान्तर प्रयोग वाक्यांशीय समानान्तरता या समानान्तर वाक्यांश कहा जाता है। इसमें समतामूलक या विरोधमूलक वाक्यांशीय समानान्तरता साथ होती है। वाक्यांशीय समानान्तरता वाक्यांशो, पदबंधों तथा उपवाक्यों में होती है। इसके उदाहरण इस प्रकार है -

"सब कुछ हर साल की तरह होता रहता है पर लक्ष्मी नहीं आती। टैक्स आता है, महँगाई आती है, अभाव आते है, मीसा की जेलयात्राएँ आती हैं, पर वह लक्ष्मी नहीं, जो पूरे शहर के लिए एक साथ आये, पूरे देश के निवासियों के लिए एक साथ आये इन्तजार करने वाले भी वे नहीं, लाने वाला भी कोई बलि नहीं।"[48]

यहाँ परिवेशगत समस्याओं का चित्रण समानान्तर वाक्यांशो के द्वारा किया गया है।

"अपनों के काम करा देना, तबादले कराना, ऊँची नोकरी दिलवाना, लाईसेंस दिलवाना, आज के नेताओं का काम बन गया है।"[49]

यहाँ इन वाक्यांशों के द्वारा नेता की कार्य प्रणाली को व्यंजित किया गया है।

"कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है क्योंकि कानून मे एकता है, वकील एक से हैं, अदालतें एक सी हैं और पुलिस-पुलिस थाना, खोजबीन की प्रक्रिया एक ही है।"[50]

कानून, वकील, अदालत, पुलिस आदि में समानता बताकर प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किया है।

"नंगे पैर रहे तो पैरों को कष्ट होता है, कपड़े के जूते पहने तो जैब को कष्ट होता है, क्योंकि पैसे अधिक खर्च होते हैं; और यदि चमड़े के जूते पहने तो हमारी संस्कृति को कष्ट होने लगता है।"[51]

"आँख का आना भी बुरा, जाना भी बुरा, उठना भी बुरा, बैठना भी बुरा।"[52]

यह विरोधमूलक वाक्यांशीय समानान्तरता का उदाहरण है।

"सरकार पहले कपड़ो की नहीं सोचती वार्डरोब की सोचती है, अन्न की नहीं सोचती रेफ्रिजरेटर की सोचती है, पानी की नहीं सोचती, पेयों की सोचती है, मकानों की नहीं सोचती दुकानों की सोचती है, जनपथ की नहीं सोचती राजपथ की सोचती है।"[53]

यहाँ विरोधमूलक वाक्यांशीय समानांतरता है, जिसके द्वारा सरकार की राजनैतिक चाल को व्यंजित किया गया है।

"हर सास का अतीत काल बहू कहलाता है और हर बहू का भविष्य काल सास कहलाता है।"[54]

'सास' और 'बहू' के पात्रों के बिच विरोधपरक समानान्तरता बताई गई है।

"पाठक का खटमल है लेखक, लेखक का खटमल है प्रकाशक तथा प्रकाशक

का खटमल है हेड ओफ द डिपार्टमेन्ट, यानी धोती ब्रांड डाक्टर साहब।"[55]

यहाँ पात्रों के बिच समतामूलक वाक्यांशीय समानान्तरता है। जिसके द्वारा साहित्य तथा शिक्षण क्षेत्र पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है।

"बचपन का सच किताबी निकला और यौवन का सच रोजी-रोटी से जुड़ गया।"[56]

इन विरोधमूलक वाक्यांशो द्वारा कटु यर्थाथ की अभिव्यक्ति की है। बचपन में जिस सच की शिक्षा प्राप्त की थी, वह व्यवहारिक नहीं था। यौवन में आ कर रोजी-रोटी के लिए व्यावहारिक सच से जुड़ने की बात यहाँ की है।

"आजकल जो जितना अधिक कुतर्क कर सकता है उतना ही अधिक सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ रहा है और जो सुतर्क कर रहा है, शर्म के कारण उसकी गर्दन झुकी हुई है।"[57]

यहाँ चारित्रिक विशेषता तथा कार्य के बिच विरोधमूलक (वाक्यांशीय) समानता को प्रस्तुत किया है।

"मुझे तो सारा देश की निद्रा की मुद्रा में देखाई देता है। न्यायालय में न्याय आँखो पर काली पट्टी बाँधे सोया हुआ है, थाने में थानेदार सोया है, संसद में नेता सोए हुए है, अकादमियों में उनके सचिव सोए है और विश्व में संयुक्त राष्ट्र संध सोया हुआ है।"[58]

"गरीब सपने देखते हुए रात बिता देता है, मध्यम करवटें बदलते रात काट देता है और अमीर सुरा-सुन्दरी के साथ क्लबों में त्यौहार मनाते हुए रात गुज़ार देता है।"[59]

ऊपर के दो उदाहरणों में समतामूलक वाक्यांशीय समानान्तरता है।

"खाने के लिए दाल, मछली पकड़ने के लिए जाल, अमीर बनने को माल, नाव रखने को पाल, रोटी खाने को थाल, संगीत जमाने को ताल, लीडर बनने को राजनीति में चाल इसी तरह अपनी माँग मँगवाने के लिए तथा असन्तोष जाहिर करने के लिए हड़ताल जरूरी मानी गई है।"[60]

इस वाक्यांशीय समानान्तरता में अपनी माँग पूरी करने के लिए बार-बार 'हड़ताल' का सहारा लेनेवालों की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"वसुंधरा पहले वीर भोग्या थी, अब वह नेता भोग्या, सत्ता भोग्या, डीलर भोग्या, कॉलोनाइजर भोग्या हो गई है।"[61]

"कहते है, डाक्टर साहब के छूने से रोगी स्वस्थ हो जाता है जैसे पारस के

परस से लोहा सोना बन जाता है, जैसे महात्मा के छूने से बाँझ को बच्चा पैदा हो जाता है।"[62]

ऊपरोक्त दो उदाहरणों में चरित्रगत समानान्तरता (वाक्यांश) है।

"आदर्श के फूल, कर्तव्य का कीर्तन, उपदेश का प्रसाद, अब सब आपके लिए है।"[63]

"जिस तरह बड़ी उम्र की स्त्रियाँ अपनी उम्र छिपाती है, व्यापारी टेक्स बचाने के लिए अपना सच्चा हिसाब छिपाता है और मंत्री अपने द्वारा किये गये गलत कार्यों की रिपोर्ट छिपाता है उसी तरह आज के युग में लेखक को अपनी पचास वर्ष की उम्र को छिपाना चाहिए।"[64]

"लालबहादुर शास्त्रीजी ने ताशकन्द समझौता किया, इंदिराजी के खाते में बेंको का राष्ट्रीय करण, प्रिवीपर्स, बंगलादेश का अभ्युदय, इमरजेन्सी जैसे महान कार्य जमा हो गये, मोरारजी भाई ने सरकार का खिचडीकरण किया"[65]

प्रत्येक वडाप्रधान ने सत्ता पर आकर कोई न कोई कार्य किया है। यहाँ कार्य की समानता को समतामूलक वाक्यांशीय समानान्तरता द्वारा व्यंजित किया है।

"जहाँ पर सूर्य की किरण नहीं पहुँच सकती, जहाँ पर चाँद की चाँदनी प्रवेश नहीं कर सकती, सम्भवत: जहाँ अर्जुन के तीर नहीं पहुँचते, जहाँ पर भीम की गदा का प्रहार नहीं हो सकता, वहाँ पर चपड़ासी महोदय का भ्रमण होता है।"[66]

'चपरासी' की चरित्रगत विशेषता को समतामूलक वाक्यांशीय समानान्तरता द्वारा प्रस्तुत किया है।

"सुविधाएँ व्यक्ति को पानीदार बनाती है जबकि गरीबी की मार उसे पानीरहित कर देती है।"[67]

"भिखारी को उसका भगवान भीख माँगता हुआ नज़र आता है और मालदार का भगवान अरबपति होता है। वैष्णव का भगवान शाकाहारी होता है और भ्रष्टाचारी का भगवान भ्रष्टाचारी।"[68]

ऊपर के दो उदाहरण विरोधपरक वाक्यांशीय समानान्तरता के है।

हिन्दी व्यंग्य निबंध में इस प्रकार की समानान्तरता के माध्यम से अनेक व्यंग्यकारों ने व्यंग्य के कथ्य को तीव्र और प्रभावशाली बनाया है।

5) समानान्तर वाक्य

एक या अधिक वाक्यों के बीच समान या विरोधी वाक्यों का समानान्तर प्रयोग समानान्तर वाक्य या वाक्यीय समानान्तरता कहलाता है। समानान्तर वाक्य के द्वारा चरित्रगत विसंगतियों को प्रभावशाली, तीव्र तथा यर्थाथ के धरातल पर अभिव्यंजित कर सकते हैं। व्यंग्य निबंधों में इसके उदाहरण मिलते हैं। जैसे -

"गांधीजी की आवाज पर लोग इकट्ठे होते थे। सुभाष की आवाज़ पर लाखों युवक प्राण देने को एकत्र हुए थे। विनोबा की आवाज़ पर आज भी लोग घर से निकल पड़ते हैं। पर मन्त्रियों और नेताओं की आवाज़ पर कोई नहीं आता। आज सुभाष होते गांधी होते और वे आवाज़ लगाते कि चले, बाँध बाँधना है, सड़के बनाना है, खेत साफ करने हैं, तो लोग आते।"[69]

"किसी आदमी की स्त्री सम्बन्धी कलंककथा वह कह रहा था, वह भला आदमी है- ईमानदार, सच्चा, दयालु, त्यागी। वह धोखा नहीं करता, कालाबाजारी नहीं करता, किसी को ठगता नहीं है, घूस नहीं खाता, किसी का बुरा नहीं करता।"[70]

इस समानानान्तर वाक्यों के द्वारा आदमी की चरित्रगत विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है।

"यद्यपि चम्पा का वृक्ष उतने ही समय मे सुगन्ध भरा फुल देता है, जितना वह चद्रगुप्त मौर्य के जमाने में देता था। लड़की उतने ही वर्षों में युवा होती है, जितनी हडप्पा में होती थी। प्रसव में उतने ही माह लगते हैं, जितने वैदिक काल में लगते थें। सम्पूर्ण शेक्सपीयर पढ़ने में उतना ही समय लगता है, जितना पिताजी को लगा। बी.ए. हम उतने ही सालों में होते हैं। नौकरी पक्की होने में उतने ही समय की परेशानी होती है।"[71]

"मेरी ज़िंदगी काफी खुश है। अफसर इस कारण खुश हैं कि खुशामंद करता हूँ और नीचे वाले इसलिए कि मैं खुसामद पसंद नहीं करता। पत्नी इसीलिए खुश है कि मैं औसत आदमी से कम अकलमंद हूँ और महल्लेदार इस कारण खुश हैं कि मैं उनकी बीवी पर कम से कम बाहरी तौर पर कोई बुरी निगाह नहीं रखता।"[72]

यहाँ वाक्यीय समानान्तरता द्वारा पात्र तथा उसके संबंधित पात्र के साथ तुलना की है।

"आप देखिए, गोडसे को इसीलिए फाँसी हुई कि उसने महात्मा गांधी को समाधि से जगाने की कोशिश की थी। केनेडी भाइयों को गोली इसलिए मारी गयी, क्योंकि वे अपने देश को जगा रहे थे। देखिए, प्रत्येक आन्दोलन में नेताओं

को दंड मिलता है, क्योंकि वे किसी-न-किसी को जगाने का प्रयत्न करते हैं। चीन को हम अपना शत्रु मानते है, क्योंकि उसने हमें जगाने का प्रयत्न किया, पाकिस्तान हमारा शत्रु है, क्योंकि वह हमें सोने ही नहीं देता। अमरीका, रूस और दूसरे बड़े देश इस देश के सबसे बड़े मित्र है, क्योंकि उन्होंने इस देश की जागृति का विरोध किया। वे चाहते थे कि यह देश सोया रहे।"[73]

"नहीं, इसमें ज्योतिष की कोई बात नहीं है, सीधी सी बात है कि यदि समाचार अंतरिक्षयान के विषय में है तो वह विदेशी है। रूस का भी हो सकता है और अमरीका का भी, पर वह भारतीय समाचार कभी नहीं हो सकता। पर यदि किसी नयी प्रकार की बैलगाड़ी के आविष्कार का समाचार है तो वह निश्चित रूप से भारतीय समाचार है।...... एटम बोम बनाने का समाचार अवश्य ही विदेशी होगा और परमाणु शक्ति द्वारा मूँगफली का आकार बढ़ाने और मुर्गी के अंडे में से एक से अधिक जदियाँ पैदा करने के चमत्कार का समाचार हमारे प्यारे वतन का ही हो साकता है।"[74]

यहाँ समानान्तर वाक्य द्वारा भारत की आंतरिक समस्याओं तथा पिछड़ेपन पर व्यंग्य किया गया है।

"मैंने देखा, नेता के दिल में रंग-भरी राजधानी की कुर्सी बैठी हुई थी। लड़के के बाप के दिल में अकड़ के साथ दहेज बैठा हुआ था। मध्यवर्गीय के दिल में बँगले का सपना तैर रहा था। सरकारी अफसर के दिल में रिश्वत सुंदरी नाच रही थी बिलकुल नंग-धड़ंग।"[75]

यहाँ अलग-अलग लोगों की मनोवृत्ति तथा मानसिकता को व्यंजित करते हुए दहेज तथा रिश्वत जैसी समस्याओं पर व्यंग्य किया गया है।

"यदि वह वाहर धूप में बैठता है तो देहाती है। यदि अन्दर कमरे में ही रहता है तो घरघुसेड़ है। यदि वह अफसर दौरे पर जाता है तो नाजायज भत्ता बनाता है, यदि बहुत कम जाता है कामचोर है। अलगरज उसे जैसा होना चाहिये वैसा नहीं है।"[76]

"एक सच वह है जिसे थानेदार साहब ने सिखाया है। एक सच यह है, जो घटा और मैंने नहीं देखा। एक सच वह जो नहीं घटा और मैंने देखा। एक सच वह है जिसे सरकारी वकील साहब ने मुझे चेंबर में रटाया। और एक साथ वह, जो विपक्षी के वकील अभी क्रॉस एक्सामिनेशन में उड़ा देंगे।"[77]

"योगी ब्रह्म साधना करता है तो मंत्री मंत्री पद की। योगी ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए भूख-प्यास सब त्याग देता है तो मंत्री अपने पद के लिए लाज-शरम सब छोड़ देता है।"[78]

यहाँ वाक्यीय समानान्तरता द्वारा मंत्री के चरित्र का अपकर्षात्मक चित्रण किया गया है।

"जानते हैं कि नेता कभी किसी का नहीं हुआ फिर भी उसे वोट दे आते हैं। जानते हैं की थानेदार किसी का नहीं होता फिर भी उसके पास न्याय की कामना से रपट लिखाने जाते हैं। जानते हैं कि सरकारी कर्मचारी किसी का नहीं हुआ परंतु फिर भी उससे बिना रिश्वत काम करने की चेष्टा करते हैं। जानते हैं कि अकादमी का सचिव केवल स्वार्थ के कदमों की आहट जानता है फिर भी उससे योग्य व्यक्ति को पुरस्कार देने की कामना करते हैं। जानते हैं कि गंगू तैली के बच्चे का कुछ होने वाला नहीं है परंतु फिर भी राजा भोज बनाने की चाह में खून-पसीने की कमाई से उसे पढ़ाते हैं।"[79]

"झूठ बोलना एक आधुनिक कला है और इस कला के सर्वश्रेष्ठ कलाकार है वकील, वेश्या तथा व्यापारी। वकील ऐसा तर्कपूर्ण झूठ वोलता है कि जज और जूरी देखते ही रह जाते हैं और अपराधी कानून के पंजे से पानी-सा साफ निकल जाता है। वेश्या प्रेम का झूठा प्रदर्शन इस नाटकीय ढँग से करती है कि विवेकशील व्यक्ति भी घर-फूँक तमाशा देखने को विवश हो जाता है। व्यापारी तो विभिन्न मुद्राओं में इस प्रकार झूठी कसमें खाता है कि असली माल के स्थान पर विशुद्ध नकली माल भेड़ने में समर्थ हो जाता है।"[80]

समानान्तर वाक्य द्वारा व्यंग्यकार ने झूठ बोलनेवाले व्यापारी, वेश्या तथा वकील पर व्यंग्य प्रस्तुत किया है।

"डॉक्टर की याद बीमार होने पर आती है, प्रेमिका की याद ज्यादातर बरसात के मौसम में आती है। पुलिस की याद घर में चोरी हो जाने पर आती है। ठीक उसी तरह ज्यों-ज्यों चुनाव नज़दीक आते हैं, वोटर की याद सताने लगती है।"[81]

"धर्म-विरूद्ध आचरण से धर्म का अपमान नहीं होता, मातृभूमि के प्रेम के गीत गानेवाले ऊँचे दामों पर मातृभूमि बेचते हैं तो उसका अपमान नहीं होता। देवस्वरूप नारी को नौकरानी बनाकर शोषण करने से देवी का अपमान नहीं होता। एक पत्नीत्त्व धर्मपालक फाइवस्टार में रात बिताकर लौटते हैं तब धर्म का अपमान नहीं होता। चर्बी मिलाकर घी बेचने से धर्म का अपमान नहीं होता। शांति का

संदेश बाँटनेवाला धर्म हथियार बाँटकर दंगे कराता है तब धर्म का अपमान नहीं होता।"[82]

"इन्द्र यदि गौतम का रूप धारण नहीं करता तो अहिल्या को छला नहीं जा सकता था। और झूठ यदि अंगूठी बनकर दुष्यन्त को नहीं बहकाता तो शकुन्तला का उससे बिछोह नहीं होता। आज़ के युग की यही विडम्बना है कि झूठ अब सत्य के वेश में सामने आता है।"[83]

ऊपर के दो उदाहरण में विरोधमूलक समानान्तर वाक्यों द्वारा व्यंग्य प्रस्तुत किया है।

"पान खाने से लेकर पान न खाने तक की आदतों को विभिन्न कोणों से बुराभला कहा गया है। हमारे ज़्यादातर नए साहित्यकारों को गालियाँ खाने और गालियाँ खिलाने की आदत है; हमारे एक पड़ौसी के बच्चे को गली-महोल्ले की नालियों में झाड़ू लगाने की आदत है। ठीक उसी प्रकार जैसे हमारे आध्यापकों को न पढ़ाने तथा विद्यार्थियों को न पढ़ने की आदत है।"[84]

यहाँ तुलना तथा निषेधमूलक अर्थबोध की वाक्यीय समानान्तरता द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"धन्य है हम भारतीय, जिन्होंने ससुराल जैसे स्थान को बूचड़खाने का प्रतीक बना दिया है। धन्य है हमारी धनलिप्साएँ, जिन्होंने हमारे सहज मानवीय संबांधों को व्यापार का दर्जा प्रदान किया है। धन्य हैं हमारी नारी जाति की सासें, जो सारे देश में समेकित रूप से समान भाव से अपनी-अपनी बहुओं से दहेज के तकाजे कर रही हैं और धन्य है हमारी बहुएँ जो सास बनने के बाद अपनी बहुओं से उसी प्रकार गिन-गिनकर बदले लेने की क्षमता रखती है।"[85]

दहेज जैसी सामाजिक बुराई पर यहाँ व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"साहब ने खाई घर पर झाड़, मूड़ आफ दफ्तर में बाबू की मुसीबत। धोबी का मूड़ आफ, कपड़ों की फ़जीहत। बीबी का मूड़ आफ, मियां का खाना ख़राब। नौकर का मूड़ आफ नौकरी से जवाब। जिधर झाँको उधर मूड़ का चक्कर, जिसने बना दिया है इंसान को घनचक्कर।"[86]

यहाँ इन्सान के 'मूड़' को व्यंजित किया है।

"जब रावण से मिलो तो 'रावणदास' बन जाओ और जब राम से भेंट करो तो 'रामदास' बन जाओ। इसी प्रकार जब कंस के दरबार में पहुँचो तो 'कंसानन्द' की पदवी धारण कर लो और जब कृष्ण से मुलाकात करो तो 'कृष्णानन्द' कहाओ।

और शिव के सम्मुख 'शिवानन्द' तथा माधव के समीप पहुँचने पर 'माधवानन्द' बन जाना चाहिए।"[87]

समय आने पर अवसरवादी बनकर अपना कार्य सिद्ध करनेवाले लोगों पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

ऊपर के उदाहरण वाक्यीय समानन्तरता है। इसमें तुलनात्मक शैली द्वारा चित्रण अधिक किया गया है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में इसका प्रयोग मिलता है।

6) आर्थीय समानान्तरता

अर्थ की दृष्टि से समवर्गीय शब्दों के प्रयोग अथवा समानार्थी शब्दों के प्रयोग अथवा श्लेष आदि के द्वारा आर्थीय समानान्तरता प्रस्तुत होती है। इसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है। जैसे -

"जिस आदमी की स्त्री-संबंधी कलंक कथा वह कह रहा था, वह भला आदमी है - ईमानदार, सच्चा, दयालु, त्यागी।"[88]

यहाँ आदमी के गुणों को समवर्गीय शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

"आप मेरे आराध्य हैं, प्रभु हैं पर वोट का ऐसा है कि वह जात वाले को ही जाएगा।"[89]

"आज धर्म, श्रद्धा, विश्वास, आस्था, भरोसा आदि शब्द मृतपाय: हो चूके हैं।"[90]

परिवेशगत विसंगतियों पर व्यंग्यकार ने अपने आक्रोश को व्यंजित करने के लिए आर्थीय समानान्तरता का प्रयोग हुआ है।

"ये करप्शन की, भ्रष्टाचार की थैली है भाई साहब, इसका रूपया कभी खत्म नहीं होगा।"[91]

"आपका तारीफ़?" जादूगर पूछता है।

"हम लीडर है, नेता!"

"कोन-से दल का नेता?"

"जिसकी मेजारिटी हो उसका नेता?"

यहाँ आर्थीय समानान्तरता द्वारा राजनीति में नेता की दलबदल की वृत्ति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।

"वेदों में लड़कियों को 'कन्या' कहकर पुकारा गया जिसका अर्थ उस लड़की

से होता था जिसे सब कोई चाहे। जो होनहार कन्या शेष जिम्मेदारियों के साथ-साथ गाय दुहना भी जानती होती थी उसे 'दुहिता' की संज्ञा दी गयी।"[93]

"..... ओनेस्ट का अर्थ लिखा हुआ है - निष्कपट, ईमानदार, सच्चरित्र, सच्चा। उसके बाद इसी शब्द से 'आनेस्टी' बना है जिसके अर्थ के साथ लिखा है- सत्यता या ईमानदारी ही सबसे उत्तम मार्ग है।"[94]

"ईश्वर-अल्ला एक ही हैं, इसे कौन मना करता है' बीरबल ने शान्त चित्त से कहा, 'लेकिन ईश्वर को मानने वाले और अल्ला को मानने वाले एक नहीं है और एक हो भी नहीं सकते।"[95]

ऊपर के तीन आर्थीय समानान्तरता के उदाहरण में समानार्थी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

"..... क्रिकेट, मारूति, कैसेट, दिल्ली, बम्बई, शेअर्स, फेन्सी ड्रेस, प्लोट, रेखा, बच्चन, व्हिस्की, सुपरफास्ट, फ्लाइट, गोल्ड, रजनीश, स्वीस बैंक, किकबिक, फाइवस्टार, जेम्स बांड, लेडी चटर्लीज़ लवर आदि। ये लोग वास्तव में भारत मे नहीं रहते , इंडिया में रहते हैं।[96]

यहाँ आर्थीय समानान्तरता द्वारा आधुनिकिकरण पर व्यंग्य किया गया है।

"आज तक आपने गुरूओं और उस्तादों से मैं यह ही सुनता आया हूँ कि भारत एक महान देश है।"[97]

"इन्कमटैक्स अथवा कस्टम सम्बन्धी छापे डाले जाते हैं, बड़ा शोरगुल होता है, ये भी समाचार आते हैं कि छापा जिसके यहाँ डाला गया उसे 'पाप' याद आये, लिस्ट बनी, ये हुआ फिर धीरे-धीरे, शनैः-शनैः, आहिस्ता-आहिस्ता जैसे सूर्यनारायण अस्ताचल को चले जाते हैं उसी प्रकार ये काण्ड भी पाताललोक की सैर करने चले जाते है।"[98]

"शब्दकोश में पार्टी का अर्थ लिखा है - जनसमूह, पक्ष, सहायक, सहयात्रियों का समूह, सैनिक का भाग, सामाजिक संघ, प्रतिवादी।"[99]

"निस्संदेह गुरू तथा उस्ताद शब्द में अर्थ की दृष्टि से पर्याप्त अवनति हुई है, परन्तु मास्टर की अपेक्षा ये सब भी सुरक्षित हैं। बेचारे हैं। 'अब तो वह दिन-प्रतिदिन अवनति के गर्त की और लम्बे कदम भर रहा है।"[100]

"तुम यह बताओ कि 'गोरी' याने 'व्हाइट', 'कलाइयाँ' याने 'रिस्ट्स' और 'आर' याने 'हैं' द आर व्याइट रिस्ट्स पापा, एम आई राइट। मैंने कहा वैल डन माई बोय।"[101]

"संसार में अगर बेवकूफ न हों तो सयानों को उपहार कैसे मिलें। बेवकूफ देते हैं। वह जो मुहावरा है कि गधे को बाप बनाना उसका अर्थ है सयानों द्वारा बेवकूफ की खुशामद! दे, उपहार दे! गिफ्ट दे! पैकेट दे!"[102]

"राह बदलती है, धरती की धुरी नहीं बदलती। धारा बदलती है"[103]

"जिस प्रकार मारूति कार कार होकर भी कार नहीं है, सिर्फ मारूति है, उसी प्रकार सभ्य लोगों की भाषा कुत्ता, कुत्ता होकर भी कुत्ता नहीं है, डॉग है। पामेरियन है, डोलमिशियन है, डोबरमैन आदि आदि है। पिछले दिनों शहर में कुत्ता शो, माफ करना 'डॉग शो' हुआ।"[104]

यहाँ अंग्रेजी भाषा के प्रति झुकाव को आर्थीय समानान्तरता द्वारा व्यंजित किया गया है।

व्यंग्य निबंधों में विसंगतियों पर प्रहार करने तथा किसी कथन पर बलप्रदान करने तथा विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्थीय समानान्तरता का प्रयोग किया गया है।

7) निरर्थक आवृत्तिमूलक शब्दीय समानान्तरता

लापरवाही तथा परिस्थिति की निरर्थकता को दर्शाने के लिए निरर्थक आवृत्तिमूलक शब्दीय समानान्तरता का प्रयोग होता है। इसे वीप्साबोधक शब्दीय समानान्तरता भी कहा जाता है। व्यंग्य निबंधों में इस प्रकार के शब्दों की आवृत्ति मिलती है। जैसे -

"राजी-बाज़ी से कब्ज़ा नहीं मिला तो लठैत बुला दरवाजा तोड़कर घुस गये।"[105]

यहाँ पैसे देकर गुंडागर्दी तथा दादागीरी को प्रदर्शित करने के लिए वीप्साबोधक शब्दीय समानान्तरता का प्रयोग हुआ है।

"थियेटर का भी कपड़ा है, पड़दा-उड़दा लगाना है क्या?"[106]

"आज़ादी के पहले तो कोई फॉर्म-वार्म नहीं भरना पड़ता था; कोई यूँ ही दंगे मे मर जाता था या फिर भुखमरी से। सारा धन्धा बिना किसी लिखा-पढ़ी के चलता था। भूल-चूक लेनी-देनी।"[107]

"चाल-चलन के मामले में मैं दोस्त-वोस्त कुछ नहीं मानता।"[108]

"मैंने उन्हें नमस्कार किया तो वह मुझे पहचान गए। बोले, 'में समझा कोई लब्बु-झब्बु होगा .....मुझे मालूम नहीं था कि तुम भी शुद्ध हवा का लाभ लेने वाले

हो।"[109]

"अरे कहाँ कमाई-धमाई! अपने यहाँ तो ज्यादा शादियाँ लड़कों की हुई है। लडकियों की होती तो हमारा मंडप तनता .... लड़कों की शादी में हमें क्या मिलता है?"[110]

"मालिक, यही विम्रता तो हमारी पूंजी है, हमारी संस्कृति है। विनम्रता है, इसलिए तो अब्बू-झब्बू कोई भी सत्ता में आ रहा है।"[111]

यहाँ 'अब्बू-झब्बू' से अर्थ है - कोई भी ऐरा-गैरा।

"उन्होंने लेखक की ओर आँख मारी और कहा, "और बर्खूदार वैसे भी डिग्री तो क्लर्की-व्वर्ली की नौकरी के लिए देखी जाती है। बड़ी नौकरियाँ तो यूं ही मिल जातीं हैं।"[112]

"जी कविता- फविता से मेरा काई संबंध नहीं है। ऐसा शोहदों-जोट्टों का काम में नहीं करता।"[113]

"हमको आ भर जाने दो, फिर देखो हम कैसे आनन्-फानन् सबको ठीक-ठीकाने लगा देते हैं, जैसे हमने अपने देश को लगा दिया है।"[114]

"वैसे कोई सफल और प्रगत लोगों की तरह मैं भी अभिमान से कह सकता हूँ, अपने आपसे कि मैंने साहित्य-वाहित्य नहीं पढ़ा है जै पढ़ा है नाममात्र को या दिखाने-भर को पढ़ा है।"[115]

'साहित्य-वाहित्य' शब्द द्वारा साहित्य के प्रति अरूचि दिखानेवाले लोगों पर व्यंग्य किया है।

"चारों दिशाओं में डीलक्स दामादों की जय-जयकार बोली जा रही है। यद्यपि लड़की और लड़कों के सम्पत्ति में अधिकार बराबर कर दिये गये हैं, पर सव लस्टम-पस्टम ही चल रहा है। पुरूष ही उत्तराधिकारी होते हैं।"[116]

"अच्छा तो सारांश यह निकला कि आप सब तरक्की की चोटी पर पहुँच गए हैं न?"

"चोटी? चोटी-बोटी हम कुछ नहीं जानते।"[117]

"हमने रेडियो और टी.वी. वाली को लिख भेजा है कि पापसंगीत बजाया जाए। पाप महान है। हमारे पास आपकी भैरवी शैरवी की आलापें सुनने का टाइम नहीं है। हमें फास्ट म्युजिक चाहिए। तेज संगीत।"[118]

"यहाँ पाश्चात्य संगीत से प्रभावित नई पेढ़ी के संगीत-प्रेम को व्यंजित किया है।

"भविष्य मेरा है! भाभी का नहीं!..... सिर्फ मुझे सुनाओ..... लाट्री वाट्री की बात बनती हो तो जरा दबा के कहना!"[119]

"सोना सस्ता कर दिया उसका कोई एहसास नहीं मान रहा। शादियां-वादियां करालों फटाफट। वक्त का क्या भरोसा। और कुछ नहीं तो प्रियजनों को भेंट करने के लिए एकाध अंगूठी ही बनवा लो।"[120]

"अगर आज गांधीजी जीवित होते तो लोगों को सर पर जूता पहनना सिखला देते क्योंकि आज की पीढ़ी सिर्फ अनुकरण करना जानती है यदि आज भी आलाकमान कहे कि, जूता सर पर धारण करना पार्टी की छवि के लिए आवश्यक है, तो नेता कार्यकर्ताधर्ता, मंत्री-वंत्री विभिन्न प्रकार के जूते सर पर पहनना प्रारंभ कर दे।"[121]

यहाँ निरर्थक आवृत्तिमूलक शब्दीय समानान्तरता द्वारा राजनीतिक दावपेच को व्यंजित किया गया है।

समानान्तरता व्यंग्य निबंध का महत्वपूर्ण शैलीय उपकरण है। जिसके द्वारा व्यंग्यकारों ने पात्रगत तथा परिवेशगत विसंगतियों तथा विषमताओं का प्रभावपूर्ण चित्रण व्यंजित किया है।

अप्रस्तुत विधान से तात्पर्य

साहित्य में अप्रस्तुत का प्रयोग शैलीय उपकरण के रूप में किया जाता है। जिसका वर्णन किया जाय वह 'वर्ण्य-विषय' या प्रस्तुत कहा जाता है, इससे विपरीत जो 'वर्ण्य-विषय' प्रस्तुत न हो उसे 'अप्रस्तुत' कहा जाता है। हिन्दी पद्य साहित्य में अप्रस्तुत विधान अधिक मिलते है। व्यंग्य निबंधों में अप्रस्तुत-विधान द्वारा व्यंग्य किया गया है। व्यंग्येत्तर साहित्य में अप्रस्तुत विधान सोन्दर्यमूलक उपकरण है, जहाँ व्यंग्य साहित्य में व्यंग्य को तीव्र और प्रहारात्मक बनाने वाला तथा विसंगतियों को चित्रित करने वाला शैलीय उपकरण सिद्ध हुआ है। इसमें अप्रस्तुत गौण तथा प्रस्तुत मुख्य होता है। व्यंग्य में अप्रस्तुत का कार्य प्रस्तुत की प्रहारात्मक शक्ति को बढ़ावा देना है। यानी प्रस्तुत की अभिव्यक्ति को अप्रस्तुत अभिव्यंजित करता है।

अप्रस्तुत विधान को सामान्यत: अलंकार का समानार्थी माना गया है। क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषणों तथा अलंकारों के प्रयोग को हम अप्रस्तुत विधान के अंतर्गत ले सकते है। अप्रस्तुत विधान के दो भेद किये जा सकते हैं। जैसे-

1) रचनापरक अप्रस्तुत विधान

2) बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान

1) रचनापरक अप्रस्तुत विधान

जहाँ अप्रस्तुत के माध्यम से नए विशेषण, नई क्रिया या नए क्रिया विशेषण का निर्माण किया जाता है। यहाँ पर विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण अप्रस्तुत होते हैं। रचनापरक अप्रस्तुत विधान के दो उपभेद हैं।

1) विशेषण के रूप के अप्रस्तुत

2) क्रिया- क्रिया-विशेषण के रूप में अप्रस्तुत

i) विशेषण के रूप में

व्यंग्य निबंधों में सामान्य विशेषण अपने आप अप्रस्तुत युक्त होते है। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"यानी मोरारजी की तरह कोई दूसरा 'बँधुआ' प्रधानमंत्री बन जाये और सरकार बच जाये।"[122]

"प्राचीन काल कई मामलों में वाकई प्राचीन काल रहा है। लोगों में बोरियत सहने का सन्यासी गुण आम था।"[123]

'सन्यासी' गुण से तात्पर्य है कि सन्यासी के समान धैर्य तथा सहनशीलता का गुण। इस गुण की अप्रस्तुत अभिव्यक्ति यहाँ हुई है।

"पूरी धरती पर छा गये काले व्यवसाय के बादल।"[124]

यहाँ 'काले' विशेषण भ्रष्टाचार को व्यंजित करता है।

"जैसा कि दस्तूर है, दफ्तर में कर्मचारीयों की एक यूनियन है जो कि आम रिवाज़ के अनुसार कर्मचारियों की नाजायज माँगों को लेकर हल्ला करती है, दिन में काम न करनेवाले कर्मचारियों को ओवरटाइम दिलवाती है और चन्दे में मिली रकम के सहारे ऐश करती है।"[125]

"पहला कारण तो यही है कि मुल्जिम शायर है और किसी शायर के बारे में, जिसकी चोरी पुराने शायरों के शेर सफ़ाई से चुराने तक ही सीमित होती है, कोई यह नहीं कह सकता कि वह रात को एक किसान के घर में घुसकर फूहड़ ढंग से चोरी करना चाहेगा।"[126]

"मर्दाना औरत अपने जनाने पति पर रौब गालिब करती है।"[127]

औरत कभी 'मर्दाना' और पति कभी भी 'जनाना' नहीं होता। यहाँ पर औरत

के रोबदार व्यवहार तथा पति के नरम स्वभाव को इन विशेषणों के द्वारा व्यंजित किया है।

"हमारे शहर की आबादी लगभग एक लाख होगी, परन्तु शहर-भर में जितना झूठ प्रतिदिन बोला जाता है उसका पचास फीसदी तो कम-से-कम यादव साहिब की पवित्र जबान से निकलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी बिलौर जैसी साफ चंदिया, चंदिया के नीचे झूठ की एक विशाल फैक्टरी है जिसमें दिन-रात झूठ तैयार होता रहता है।"[128]

'पवित्र' यानी पाक, सच्चा। किन्तु यहाँ झूठ को व्यंजित करने के लिए 'पवित्र' विशेषण का प्रयोग किया गया है।

"जो लड़की स्कूटर, कार या पैसा पैदा न कर सके, ऐसी बाँझ औरत भी पति के किस काम की! पति उसे फूँककर परलोक भेज देता है क्योंकि ऐसी बाँझ का इहलोक तो बिगड़ ही गया न; पति के हाथों मरकर शायद परलोक ही सुधर जाए।"[129]

जो स्त्री संतान पैदा नहीं कर सकती उसे 'बाँझ' कहा जाता है। किन्तु यहाँ जो स्त्री अपनी शादी के वक्त दहेज नहीं लाती उसे बाँझ का विशेषण दिया है।

"संपादक ने सफारी सूट पहना तो संयुक्त, सहायक, उप संपादकों प्रूफ रीडर्स और यहाँ तक कि संपादक के प्यून (चपरासी) तक सफारी सूट पहनने लगे। मुझे लगा कि पत्रकारिता में सफारी क्रांति आ गई है।"[130]

"अपने-अपने क्षेत्र के रावण घूम रहे हैं और अपनी रावणी-वृत्ति दिखा रहे हैं।"[131]

रावण जन्म से असूर था। उसमें कई आसुरी वृत्तियाँ है। यहाँ रावण जैसी भावना तथा वृत्तिवाले लोग आज भी आधुनिक समाज में व्याप्त है। इसी बात पर यहाँ 'रावणी' विशेषण को व्यंजित किया है।

"शहर की घायल सड़कें और गंदी गलियाँ मुनसपल्टी से चीख-चीखकर कह रही थीं कि हमारा उद्धार करो।"[132]

यहाँ मुनसपल्टी की टूटी सड़कों के लिए 'घायल' विशेषण का प्रयोग किया है।

व्यंग्य निबंध साहित्य में अनेक नए विशेषण व्यंग्य को व्यंजित करने के लिए प्रयुक्त हुए है।

ii) क्रिया- क्रिया-विशेषण के रूप में

क्रिया तथा क्रिया-विशेषण के रूप में अप्रस्तुत विधान का प्रयोग व्यंग्य निबंधों में हुआ है। उसके कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है-

" .. लेकिन हाय री बगुला भक्ति! और हाय रे मनहूस तबियत! उन्हें उल्लू नेता भाषणों के कोड़े मार रहे हैं।"[133]

यहाँ नेता द्वारा दिये जाने वाले लम्बे भाषणों पर व्यंग्य किया गया है। भाषण द्वारा कोड़े मारने की क्रिया अप्रस्तुत है।

"कांग्रेसी को उलझन नहीं है। वह सीधा साफ सोचता है। वह तो सत्ता के पास खिसकेगा रेंगता हुआ"[134]

रेंगता हुआ का अर्थ है - धीरे-धीरे सर्प के समान रेंगना। यहाँ पर सत्ता के पास खिसकने की तथा रेंगने की क्रिया से कांग्रेसी की सत्तालोलुपता पर व्यंग्य किया गया है।

"फाइल उदित हुई, बैठकें चहचहायीं।"[135]

"गांधीवाद चल निकला। वह चलता-चलता नगर-निगम में घुसा, विधान-सभाओं में घुसा और जाकर लोकसभा में भी बैठ गया।"[136]

"जिधर जाओगे, तुम्हें समय ठहरा हुआ मिलेगा या बहुत हुआ तो रेंगता हुआ।"[137]

"भजन की भाँती भोजन भी युक्त लय में चल रहा था।"[138]

"कई लोग मुफ़्त की शराब इतनी पीते हैं कि नालियों को इलाहाबाद का संगम समझ कर उसमें तैरने और डुबकियां लगाने लगते हैं।"[139]

यहाँ मुफ्त की शराब अधिक पिनेवालों की मनोवृत्ति को व्यंजित किया गया है।

व्यंग्य निबंधों में व्यंग्यकारों ने विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण के रूप में अप्रस्तुत का प्रयोग करके व्यंग्य को सम्प्रेषित किया गया है।

2) बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान

जहाँ प्रस्तुत और अप्रस्तुत वस्तु या पदार्थ के बीच किसी समान धर्म के आधार पर सादृश्य दिखाया जाता है और इसी कारण जो बिम्ब प्रस्तुत होता है, उसे बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान कहते है। बिम्बात्मक अप्रस्तुत विधान सादृश्य पर आधारित होता है। अप्रस्तुत को सादृश्य मूलक अलंकार का समानार्थी माना जाता

है। काव्य में इस प्रकार के अलंकार को काव्य-सौन्दर्य के लिए प्रस्तुत किया जाता है। व्यंग्य में व्यंग्यकारों ने व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति और प्रहारात्मकता लाने के लिए उपमा, रूपक, व्याज-स्तुति, अपकर्ष, मानवीयकरण, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

i) उपमा

जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरे से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

इसका सर्वाधिक प्रयोग हिन्दी साहित्य में विभिन्न प्रकार के सादृश्य-मूलक उपमानों के प्रयोग के रूप में मिलता है। जिसका मूल आधार उपमा है। व्यंग्य निबंधों में 'उपमा' का प्रयोग विविध क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों पर प्रहार करने के लिए किया है। इसके कुछ उदाहरण -

"अटलबिहारी का हाल उस चंचल नारी सरीखा है, जो चाहती है कि सारा शहर उस पर जान दे।"[140]

"कमलादास की आत्मकथा कबाब की प्लेट है।"

"अमृता प्रीतम की आत्मकथा लस्सी का गिलास है, जिस पर झाग है।"[141]

"प्राइवेट सेक्टर के कारखाने में बनी मुस्कान व्यापारी के चेहरे पर होती है। इसे नकली मूंछ की तरह फौरन पहन लिया जाता है।"[142]

"भैंसे इन नव-दौलतियों की तरह होती हैं जिन्होंने देश के आर्थिक जीवन को कीचड़ कर दिया है।"[143]

यहाँ देश की गिरती हुए आर्थिक परिस्थिति को व्यंजित किया है।

"पूरा प्रजातन्त्र लगता है एक विशाल शीशमहल है।"[144]

"समाजवाद कैकटस की तरह खड़ा हुआ है। पानी नहीं, सहारा नहीं, फिर भी खड़ा है।"[145]

"एक लोक कवि ने कहा है कि यौवन जो है वह अंग्रेजी राज्य की तरह सर्राता है।"[146]

"एक तो वे जो बात को वहीं का वहीं खत्म कर देते हैं और दूसरे वे जो बात में से बराबर बात निकालते चले जाते हैं। प्याज़ के छिलकों की तरह यह क्रम तब तक चलता रहता हैं जब तक या तो प्याज़ ही खत्म न हो जाये या जब तक बातचीत के स्थान पर जूता नाम का पदार्थ ही न चलने लगे।"[147]

यहाँ 'प्याज के छिलकों' की उपमा बातूनी आदमी को व्यंजित करती है।

"मैं जिस समय उनके बंगले पर पहुँचा, वे बारामदे में फर्नीचर जैसे पड़े थे।"[148]

यहाँ आदमी की निष्क्रिय अवस्था को 'फर्नीचर' उपमा द्वारा व्यंजित किया है।

"काली औरतें मुझे स्टीम इंजिन की तरह भौड़ी लगती है।"[149]

"शरम के सारे प्रतीक नयी-कविता की तरह चेहरे पर मौजूद रहते हैं।"[150]

"सीट उसका बोझ एक लम्बे अर्से से ढो रही थी - एक सौत की तरह।"[151]

"जमुना के पानी की तरह खतरें की सीमा-रेखा भी पार कर गये।"[152]

"वह परिवार नियोजन का अधिकारी-सा लग रहा था।"[153]

"उस दिन एक भरी हुई बस के दरवाजे के साथ में छिपकली के समान लटका हुआ था।"[154]

बस में बैठने की जगह न होते हुए भी लोग 'छिपकली' की तरह बस में सवार होते है। इसी बात पर यहाँ व्यंग्य किया है।

"तुम्हारा चहेरा रिजेक्टेड थीसिस के समान क्रांतिहीन क्यों हैं?"[155]

"नोटों की गड्डी मुझे मैनका जैसी लग रही थी, प्यारी-प्यारी।"[156]

"मेरा व्यक्तित्त्व पराजित उम्मीदवार की तरह फीका पड़ रहा है।"[157]

"लीड़र सूअर के बच्चों की तरह पैदा हो रहे हैं।"[158]

जिस प्रकार सूअर कई बच्चों को पैदा कर सकता है, उसी तरह आज-कल नेताओं (लीडर) की संख्या बढ़ती ही जाती है। इस बात को 'सूअर' की उपमा देकर व्यंग्य किया गया है।

"आज की शिक्षण संस्थाएँ अपने आप में समाज व वास्तविक जाति से कट कर एक द्वीप जैसी बन चूकी है।"[159]

"हमारी श्रीमती को यदि कोई संदेश टेलीग्राम से मिले तो पहले तो उनकी हालत पंक्चर साइकिल के समान हो जाती है।"[160]

टेलीग्राम का नाम सुनते ही स्त्री की हालत अक्सर थौड़ी नरम पड़ जाती है। यहाँ स्त्री सहज भाव को 'पंक्चर साइकिल' की उपमा देकर व्यक्त किया गया है।

"ड्राइवर का शरीर विदेशी नीति की तरह ठिठुरता है।"[161]

यहाँ व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य ड्राइवर के शरीर को वर्णित करना नहीं, बल्कि भारत की टूटी-फूटी विदेशी नीति पर व्यंग्य करना है।

"इधर हमारी बीवी बरसाती नदी की तरह जवान हो रही थी और इधर जल्दी से जल्दी उसके हाथ पीले करने की चिंता में हमारे ससुर की नींद हराम हो रही थी।"[162]

"हमारी उंगलियां पाइप मशीन पर ऐसी थिरकती थीं, मानो वह हारमोनियम हो।"[163]

"जैसे ही हमने पचपन पार किए हमें अपनी रिटायरमेंट हमेशा अपनी हथेली पर सरसों की तरह लगती हुई दिखाई देने लगी।"[164]

"घबराहट में आफिस पहुंचा। वहाँ मेरा सूटकेश माल-मशरूका की तरह पड़ा था।"[165]

"हिन्दुस्तान तुम्हें अपने आलिंगन-पाश में लेने को अंधे धृतराष्ट्र की तरह अपनी आतुर बाँहें खोले बैठा है।"[166]

"वैसे भी बजट प्रभु की मूरत की तरह होता है जिसकी जैसी श्रध्धा होती है, वैसी धारणा कर लेता है।"[167]

"बेचारा ऊँट एक, करवटें अनेक। अब इतनी सारी करवटों के बीच बेचारा आम आदमी 'नक्कारखाने की तूती' तरह होता जाता है।"[168]

"हमारा मूड़ बरसात के बाद पिच की तरह खराब हो गया।"[169]

"कोदण्डशास्त्री का मूड़ स्वार्थी संसद सदस्य की भाँति वापस आ गया।"[170]

"महँगाई द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ती ही चली गई, चली जा रही है।"[171]

महँगाई की समस्या को व्यंजित करने के लिए 'द्रोपदी के चीर' की उपमा दी गई है।

"चुनाव में खड़े होने का शौक महामारी की तरह फैलता चला जा रहा है।"[172]

यहाँ उपमा द्वारा नेताओं की बढ़ती संख्या पर व्यंग्य किया गया है।

"कमरा खुला है, एक दूसरे डाक्टर को ढूंढा गया लेकिन लगा वे गौतम बुद्ध की तरह विरक्त होकर कमरा छोड़कर चले गए है।"[173]

"श्रध्धा छूत की बीमारी की तरह बढ़ती रही।"[174]

"मेरे कुरते में दो ही जेबें हैं। एक राजपूत की तलवार की तरह लटकती हुई बगली और दूसरी दीवार के ताक की तरह ठीक सामने।"[175]

"जनता प्राय: इस प्रकार बैठी रहती है मानो अपने किये का प्रायश्चित कर रही है।"[176]

"अंग्रेज हुकमरान हमारी आजादी को जमाखोर बनिये की तरह दबाये बैठे

थे।"[177]

"अब तक कतार देश की शिक्षण संस्थाओं की तरह बढ़ चुकी थी और वैसे ही उसका स्तर भी गिर चुका था।"[178]

"भक्त-शिरोमणि हाथ जोड़कर ठीक उसी तरह विराजमान थे, ज्यों 'ट्यूशनार्थ' आया कोई विद्यार्थी अपने (फ) 'टीचर' के सम्मुख विराजित हुआ करता है।"[179]

"गरीबों के लिए आजादी काली बिल्ली की तरह है, जिसे वे टटोलते रहते हैं, लेकिन कहीं दिखाई नहीं पड़ती।"[180]

आजादी मिलने के पश्चात् भी गरीब लोग अपने स्तर से ऊपर नहीं ऊठ पाये है। उसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

व्यंग्य निबंध में अनेक नए-नए उपमानों द्वारा व्यंग्य को विलक्षण और प्रभावशाली बनाया है। व्यंग्य निबंध की भाषा को सशक्त बनाने के लिए 'उपमा' का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। जिसके द्वारा विसंगतियों का पर्दाफाश किया गया है।

ii) रूपक

व्यंग्य को सम्प्रेषित करने के लिए रूपक एक सशक्त शैलीय उपकरण है। इसके द्वारा व्यंग्य की धार अति तीक्ष्ण हो जाती है। इसलिए व्यंग्यकारो ने उपमा के बाद रूपक अलंकार का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है।

उपमान और उपमेय के अभेद को रूपक कहते है। अथवा उपमेय में उपमान के आरोप को रूपक कहते हैं। व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त रूपक के कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

"मेरे एक दोस्त के कर भी कमल हो गये हैं। मुझसे कुछ बेहतर क्वालिटी के! क्योंकि वे पाँच उद्घाटन इस मौसम में कर चुके हैं।"[181]

"व्यक्तिगत स्वाधिनता के मामलों में पनपता पूँजी का वृक्ष और असहयोग के मरूस्थल पर कैकटस-सा समाजवाद।"[182]

"तब नारा लगता गुलामी के घी से आजादी की घास अच्छी है। इस नारे पर बहुत लोग जेल जाते थे। वे भी चले गए। सन् 47 के बाद भी लोग जेल जाते रहे।"[183]

आज़ादी के पश्चात् पनपती राजनीतिक विसंगतियों को 'धी' तथा 'घास' के रूपक से व्यंजित किया है।

"मैंने तुरन्त अभिव्यक्ति की बाटली पर संयम का बुच लगाया अर्थात् चुप रह गया।"[184]

"लिंकन का कहना था कि ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है जो तोड़ा न जा सके। उसी प्रकार यदि सुख रूपी सीता का वरण करना चाहते हो तो पुराने संकोच का धनुष तोड़ो।"[185]

पुरानी संस्कृति का त्याग करके नई संस्कृति को अपनाने के लिए रूपक का प्रयोग किया गया है।

"ये सरकार की फाइल भी एक अजीब चीज़ है। सरकार रूपी जो प्रेत है, उसके प्राण फाइल रूपी तोते में ही रहते हैं। इसी कारण फाइल को हिफाजत से रखा जाता है और आमतौर पर उन कोई कार्यवाई नहीं की जाती।"[186]

यहाँ 'प्रेत' तथा 'तोते' के रूपक द्वारा प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

"जो बेचारा अपने कर्तव्यों की चक्की में पिस रहा हो, ... उसका जितना शोषण कर सको करो, वह तुम्हारा शिकार है।"[187]

महेनत मजूरी करनेवाला अमीर के हाथों का खिलौना बन जाता है। यहाँ 'चक्की' के रूपक इन्हीं के चरित्र को रेखांकित करता है।

"व्यापारी ही है ये। धर्म की मोहर न होकर मोहर के धर्म है ये।"[188]

यहाँ 'मोहर' रूपक द्वारा पंडित मुल्लाओं की धर्म के नाम कर रहे व्यापारी प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"चुनाव का मौसम लीडर रूपी मेढ़कों के लिए बरसात का मौसम होता है।"[189]

जिस प्रकार मेढ़क सीर्फ बरसात के मौसम में दिखाई देते है। उसी प्रकार चुनाव आते ही पाँच साल तक कभी भी अपनी शक्ल न दिखानेवाला नेता लम्बे-चौड़े वादों के साथ घर-घर वोट माँगने निकल पड़ता है। इसीको व्यंजित करने के लिए व्यंग्यकार ने 'मेढ़क' का रूपक प्रस्तुत किया है।

"जनता-जनार्दन नेत्र-कमलों से अपने डार्लिंग नेता के दीदार लेती है। अपने कर्ण-विवरों से नेता के मुखारबिन्द से निकले हुए वचनामृत को ग्रहण करती है।"[190]

अपने प्रिय नेता को देखने तथा उनके भाषणों को सुनने की प्रक्रिया को रूपक के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

"मोटर चलाने को जैसे पेट्रोल आवश्यक है, उसी प्रकार नेता को राजनीति रूपी कार चलाने को भाषण रूपी पेट्रोल आवश्यक है।"191

यहाँ 'कार' तथा 'पेट्रोल' के रूपक द्वारा नेता के जीवन में भाषण की आवश्यकता पर व्यंग्य किया है।

"बाबूजी के सिर पर चढ़ा हुआ चांद है
बीवी जी का मुख भी पूनम का चांद है
जब कभी लड़ती
सर पर चढ़ती
लगता है चांद पर चढ़ आया चांद है।"192

"किसी के दाँत परस्पर अमेरिकन फ्री स्टाइल में कुश्ती लड़ रहे होंगे तो किसी के छोरों के किनारे पर हाथी की तरह दो दाँत बहार निकल कर कन्नी दाब रहे होंगे। किसी के सामने के चार या छै दाँत बाहर निकलकर नीचे के होंठ रूपी बरामदे का छज्जा-सा बना लेते हैं।"193

"तुम्हारे वोट रूपी यौवन के लुटेरे दिनदहाडे तुम्हें फुसलकर लूट लेते हैं और तुम देखते रह जाते है।"194

यहाँ 'यौवन के लुटेरे' रूपक द्वारा बेईमानी से नेता जनता को बहला-फुसलाकर उनके वोट हथिया लेती है। इसी चुनाव-प्रक्रिया के तरीके को व्यंजित किया गया है।

"आजकल तो जो अपने जनता-रूपी माता-पिता की आंखों में धूल झोककर उनकी सेवा का टिकट प्राप्त कर लेता है वही सच्चा देशसेवक कहलाता है।"195

"फिर अचानक ही मन में यह बात आई कि क्या आदमी के मन रूपी पन्नों के लिए भी पेपरवेट नहीं है? जब कागज़ फड़फड़ाता है तो वह उसे पेपरवेट से दबा देते हैं। क्या इसी भांति मन के उड़ने और फड़फड़ाने पर उसे भी नहीं दबाया जा सकता?"196

यहाँ 'पन्नों' रूपक द्वारा मनुष्य की मानसिक मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया गया है।

"बाबू जनता का कष्ट दूर करने के साथ-साथ महंगाई रूपी वैतरणी उतारकर अपना ही कष्ट दूर कर रहे थे।"197

यहाँ महंगाई का बहाना बनाकर सरकारी अफसरों की रिश्वत लेने की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

व्यंग्य निबंधों में व्यंग्यकारों ने रूपक के प्रयोग द्वारा चरित्रगत तथा परिवेशगत विसंगतियों तथा विषमताओं का तीव्र तथा प्रहारात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

iii) व्याज-स्तुति

व्याज-स्तुति मे वस्तु अथवा व्यक्ति की प्रशंसा के बहाने उसकी निन्दा की जाती है। इस अप्रस्तुत विधान के द्वारा विसंगतियों की निन्दा का चित्रण यथार्थ के घरातल पर होता है। "व्याज-स्तुति में विडम्बना को उभारने की अपूर्व शक्ति विद्यमान है। व्यंग्यकार को जो अर्थ अभीष्ट होता है ठीक उसके विपरीत कहकर विडम्बना को उभारता है।"[198] इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित रूप से प्रस्तुत किए जा सकते है। जैसे -

"ग्रीक विदुषी ने कहा-ग्रीस में दहेज प्रथा है।

इसे जानकर मेरे विशुद्ध भारतीय हृदय में आनन्द भर गया। महान् सभ्यताओं का यही होता है। महान् सभ्यता जब बीच में आकर सड़ती है तब उसमें अछूत-प्रथा, सती-प्रथा और दहेज-प्रथा की बीमारियाँ पैदा होती है।"[199]

यहाँ सामाजिक विसंगतियों की ओर निन्दात्मक व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"निन्दा में विटामीन और प्रोटीन है, निन्दा खून साफ करती हैं, पाचन-क्रिया ठीक करती है, वल और स्फूर्ति देती है। निन्दा से माँस पेशियाँ पुष्ट होती हैं। निन्दा पायरिया का तो शर्तिय इलाज है। सन्तों को परनिन्दा की मनाही होती है, इसलिए वे स्वनिन्दा करके स्वास्थ्य अच्छा रखते हैं।"[200]

"इण्डिया इस ए ब्यूटिफूल कन्ट्री। और छूरी-काँटे से इण्डिया को खाने लगे। जब आधा खा चुके, तब देशी खाने वालों ने कहा, अगर इण्डिया इतना खूबसूरत है, तौ वाकी हमें खा लेने दो। तुमने 'इण्डिया' खा लिया। बाकी बचा 'भारत' हमें खाने दो।"[201]

भारत देश में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों की व्याज-स्तुति द्वारा निन्दा की है।

ओलम्पिक में हमारी भारतीय टीम जाती हैं तो अकसर हारकर वापस लौटती है। उस पर व्यंग्यकार ने व्याज-स्तुति द्वारा व्यंग्यात्मक प्रहार किया है। जैसे-

"भारत एक महान् देश है, यहाँ शरीर को नहीं आत्मा को महत्त्व दिया गया है। हमारा जो खिलाडी वहाँ जाता है, वह देश का प्रतिनिधित्त्व करता है। गति पश्चिम का रोग है। हर क्षेत्र में वे दौड़ रहे हैं भौतिक स्वार्थों के लिए। ओलम्पिक

में भी यही हाल है। अमेरीका और रूस स्वर्ण-पदक बटोरने के लिए पागल हो जाते हैं। बताइए क्या यह इन्हें शोभा देता है! भारत ने इस मामले में अपनी उच्चता कभी नहीं खोयी है। हमारी संस्कृति है, एक महान अतित है, जब भी आगे बढ़ने का सवाल आया, हमने सदैव लखनवी अन्दाज में झुककर दूसरे से कहा - 'पहले आप!' महज एक गोल्ड मेडल के लिए हम अपना कल्चर तो नहीं छोड़ सकते!"[202]

"वैसे भी पिछले कई वर्षो से इस संस्थान में छात्र कम और पुलिस-बटैलियन ज्यादा उपस्थित रहे हैं जो कि एक सन्तोष का विषय है। आप लोगों के सामूहिक प्रयत्नों के फलस्वरूप इस संस्थान का फर्नीचर, रसायनशाला, पुस्तकालय व दफ्तर पूरी तरह जला दिये गये हैं जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।"[203]

यहाँ व्याज-स्तुति द्वारा शिक्षण संस्थाओं के नैतिक पतन को अभिव्यंजित किया गया है।

"जैसा कि मुझे बताया गया, मरनेवाला एक आम किस्म का इन्सान था। बाकी लोगों की भाँति यह भी दफ्तर में सोता था, थोड़ा बहुत काम करता था, बीड़ी फूँकता था और सन्ध्या समय साइकिल सँभालकर अपने घर चला जाता था। दिल का साफ था और अपने-पराये में ज्यादा भेदभाव नहीं रखता था और इसी कारण स्थिति यह थी कि एक शाम अपनी पुरानी साइकिल के स्थान पर अपने किसी सहयोगी की नयी साइकिल ले जाते हुए पकड़ा भी गया था।"[204]

सरकारी कर्मचारी की काम-चोरी तथा आलसीपन की प्रवृत्ति पर व्याज-स्तुति द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"यथार्थ में हर ऐरे-गैरे का गधे पर बैठना गधे को अपमानित करना है। जो देवी शीतला का वाहन हो, जिसे ईसा मसीह के परोहन होने का सौभाग्य प्राप्त हो, उस पर यदि नत्थू-खैरे चढ़ने लगे तो गदर्भ का अपमान न होगा तो और क्या होगा?"[205]

'साइकिल' की बुरी हालत का वर्णन व्याज-स्तुति द्वारा इस प्रकार किया है-

"हमारे एक मित्र हैं नवलकिशोर भारती। आपने ताजमहल देखा है। नहीं देखा तो भारतीजी की साइकिल देख लीजिए। साइकिल क्या है, मुमताज की यादगार है। एक-एक पुर्जा ताजमहल का पीस है। सीट क्या है, गुलाब का पौधा। बैठे नहीं कि काँटा चुभा। टायर इतने चिकने कि ताजमहल का संगमरमर भी शरमा जाए। ब्रेक इतना जानदार कि दिल्ली में मारो तो साइकिल सीधी आगरा में

आकर रूके।"[206]

"मैं अंग्रेजी का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मेरी सुख-सुविधा के लिए नौकर भेजा। और वह लड़का अंग्रेजी का आभारी है कि उसके कारण 'वह हम जैसे बड़े लोगों के संपर्क में आया, नहीं तो गांव-गवई में पड़ा रहता और ज्यादा से ज्यादा पढ़ा लिखा किसान बन पाता। सच बात है। अंग्रेजी न होती तो उसे इतनी ऊंची शिक्षा कौन देता।"[207]

"महानगर के अस्पताल में अधूरी सूचना पर मरीज का पलंग ढूंढ निकालना, अमेरिका खोजने से भी बड़ा काम हैं।"[208]

"उस दिन स्वर्गपुरी (गंदा नगर) के इस नलघट पर भी कम से कम पचास घडे, कई बर्तन और बाल्टियाँ पानी की प्रतीक्षा में तरतीबवार पंक्ति बद्ध रखे हुए थे। उन सब को देखकर मुझे लगा कि भारत 'क्यू सिस्टम' बहुत ही उच्च कोटी का है।"[209]

यहाँ भारत की सामाजिक समस्याओं का व्याज-स्तुति द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"अपनी संस्कृति की महानता का बोझा ढ़ोते-ढ़ोते इस देश को बुढ़ापा सताने लगा हैं हर भारतीय पर जन्म से ही इस पुरातन महानता का एक बोझ होता है। इसीलिए अपनी भाषा, अपनी पोषाक, अपने धर्म तथा अपनी हर चीज़ से मुझे भी दिली परेम है, चाहे वह अपना पेशाब ही क्यों न हो।"[210]

हमारे देश की रूढ़ हो गई संस्कृति पर व्यंग्य किया गया है।

"हिन्दी फिल्मों में जो पुलिस बताई जाती है कर्तव्य परायण में उसका मुकाबला किसी भी देश की पुलिस नहीं कर सकती।"[211]

यहाँ व्यंग्यकार का आशय पुलिस के 'कर्तव्य परायण' की प्रशंसा करना नहीं बल्कि उनके व्यवहार की व्याज-स्तुति द्वारा निंदा करना है।

"जिस विभाग में रिश्वत की संभावनाएँ न हो उसे या तो बंद कर दिया जाए अथवा उसके कर्मचारियों को महँगाई-भत्ते की तर्ज पर रिश्वत भत्ता दिया जाए। रिश्वत लेना अपराध न हो अपितु जो व्यक्ति सबसे अधिक रिश्वत लेकर सरकार को जितना अधिक कर दे उसे रिश्वत-शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया जाए।"[212]

यहाँ रिश्वत लेनेवालों की प्रशंसा करना व्यंग्यकार का उद्देश्य नहीं है। वह रिश्वत जैसी विसंगती पर व्याज-स्तुति द्वारा व्यंग्यात्मक प्रहार करना चाहता है।

"प्रात: स्मरणीय डाकू-श्रेष्ठ, माफिया-श्री, तस्कर-शिरोमणि, ठग-रत्न,गुंडा-सम्राट, कारागार-प्रेमी, कालाबाजारी आदि समाजसेवी देश की सेवा के लिए चुनाव मैदान में कूदे हैं।"[213]

यहाँ समाज में आतंक फैलानेवालों को 'समाज-सेवी' कह कर उनकी निन्दा द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"कामचोरी की बीमारी को आपने पत्रकार होने के नाते काफी घुमाऊ-फिराऊ भाषा में व्यक्त किया है। यद्यपि आप तो जानते हैं कि कामचोरी काई चोरी नहीं होती। जहाँ तक सफलता के दूर होते ज़ाने का सवाल है, यह कामचोरी की आदत के कारण तो बिल्कुल नहीं। आजकल ज्यादातर सफल लोग आपको कामचोर नज़र आयेंगे। आपकी असफलता का कारण है, काम न करने से उत्पन्न होने वाली हीन भावना। इस हीन भावना को मन से निकाल फेंकिए। सफलता आपके चरण चूमती नज़र आएगी।"[214]

"किसी कछुवे को आप किसी दफ्तर में लाकर छोड़ दीजिए। यकीनन वह शरमा कर अपनी गर्दन खोल के अंदर कर लेगा। लगता है, आकाशवाणी से धीमी गति के समाचार बुलेटिन प्रसारित करने का विचार किसी प्रोग्राम डायरेक्टर को दफ्तर की 'क्यू' में खड़े-खड़े ही आया होगा।"[215]

यहाँ सरकारी दफ्तरों में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

अत: स्पष्ट है कि व्यंग्यकारों ने व्यंग्य निबंधों में व्याज-स्तुति के माध्यम से अनेक क्षेत्रीय विसगतियों को व्यंग्यात्मक रूप से उजागर किया है।

iv) अपकर्ष

"किसी प्रतिष्ठित व्यापार के साथ निन्दित अप्रतिष्ठित व्यापार को वैदग्ध्यपूर्ण ढंग से, एक साथ रखना तथा उनमें साम्य स्थापित कर निर्णय देने की प्रवृत्ति अपकर्ष के अन्तर्गत आती है।"[216] परिस्थिति जन्य प्रहार करने के लिए अपकर्ष महत्त्वपूर्ण शैलीय उपकरण है। इसके कुछ उदाहरण देखिए-

"इस आदमी के मन में क्या प्रतीक उभरता होगा? वह सूर्य को परमात्मा का लोटा समझता है। सूर्य के लोटे को उठाकर परमात्मा क्षितिज के नाले में उतर जाता है क्योंकि परमात्मा के घर में पाखाना नहीं हैं। जब तक इस आदमी का अपना पाखाना नहीं बन जाता, यह सूर्य को परमात्मा का लोटा समझता रहेगा।"[217]

"किन्तु सरकार की नीति धर्मात्मा की नीति है। पहले वह बड़े-बड़े जमींदार,

भूमिपतियों, तस्करों, व्यापारियों, बेईमानों को अवगत करा देती है कि तुम्हारी चीज़ें छीन ली जाएगीं।"[218]

उक्त उदाहरण में तस्करों तथा बेईमानों के साथ जमींदार, भूमिपतियों और व्यापारियों को रख कर उनका अपकर्ष किया गया है, परन्तु इन सब के एक समान भ्रष्ट तथा बेईमानी के चरित्र को व्यंजित किया है।

"सीकरी में तो सबका सम्मान होता है। साधुओं का, गायकों का, वेश्याओं का, विचारकों का, हीजड़ों का, समीक्षकों का, जो सम्मान के योग्य है, उन्हें सम्मान मिलना चाहिए।"[219]

"चुनाव जीतने के बाद गधा लोग नेता कहलाते हैं। .....जिस दल में ज्यादा गधे होते हैं, वही दल सरकार बनाता है और उसी कारण कभी-कभी ऐसी नाजुक स्थिति आ जाती है कि दलबदल करने के संदर्भ मे एक-एक गधे की कीमत करोडों रूपयों तक पहुँच जाती है। इतनी भारी रकम के सामने गधा यदि दलबदल न करे तो और क्या करे?"[220]

पैसे लेकर दलबदल की वृत्ति रखनेवालें नेता पर व्यंग्य किया गया है।

"इस चमन को आजाद हुए पच्चीस वर्ष हो गए। इस अवधि में यहाँ काफी कुछ हुआ। नदियों पर बांध बंधे, सीमा पर युद्ध जीते गए, कारखानों और बैंकों में हडतालें हुई और सड़कों पर दंगे हुए! नये स्टेशन और कारखाने खुले और कहीं-कहीं पुलिस के सहयोग से आम नगरिकों की खोपड़ियां भी खुलीं।"[221]

"खुदा बचाये हसीनों की तेज चालों से हकीम-वेश्या-वकील के दलालों से।"[222]

"हम अपनी औकात भूल जाते हैं। वह कैनोपी अंग्रेजों ने बनाई थी और उन्होंने उसमें जार्ज पंचम की मूर्ति स्थापित की थी। अब आप यह कैसे सोच सकते हैं कि आप अंग्रेजों के कामों को सुधार सकते हैं, आप उनकी चीजों को परिवर्तित कर सकते हैं, आपकी भाषा उनकी भाषा की जगह ले सकती है, आपकी मूर्तियाँ उनकी मूर्तियों का स्थान ले सकती हैं..... आप लोगों का यह दुस्साहस!" महान् नेता क्रोध में थर-थर कांप रहे थे।"[223]

ऊपर के उदाहरण भी इसी प्रकार अपकर्षमूलक व्यंग्य की वक्र-दृष्टि पर आधारित है।

"अंत में मैंने दोस्त को बताया कि मेरा नगर इसलिए भी बड़ा है कि यहाँ तुम्हारे नगर की अपेक्षा दंगे अधिक होते हैं, यहाँ गर्द, वीडियो, मटका, गुंडागर्दी

के केन्द्र भी ज्यादे हैं, इतना ही नहीं यहाँ का वेश्या महोल्ला भी कहीं बड़ा है। एड्स जैसी प्रगत बीमारी के कुछ रोगी भी यहाँ सुने गये हैं।"[224]

समाजिक स्तर को पतन की ओर ले जानेवाली बातों पर यहाँ अपकर्ष द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"गधे हकीकत तो यह है कि गधा हमारा राष्ट्रीय पशु है जैसा भी है, गधा एक महान् योगी होता है। ..... संतोष, त्याग, बलिदान की साक्षात् मूर्ति यह, बैल का छोटा भाई कहा जा सकता है।"[225]

"कवियों की संख्या और उनकी सर्जनात्मक रचनाओं की पैदावार को देखकर बड़े से बड़े सूअर तथा कीड़े-मकोड़े भी मैदान छोड़कर भाग जाने को तैयार हो जाते हैं।"[226]

कवियों और उनकी रचनाओं की बढ़ती संख्या को 'सूअर' और 'कीड़े-मकोड़ों' के साथ अपकर्षात्मक तुलना के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

"दिल्ली के जेबकरते! भगवान इनसे बचाए! बनारसी ठग इनके आगे पानी भरते हैं। इनका रंगरूप और सजधज देखकर सन्देह करना तो दूर रहा, आपका सिर श्रद्धा और आदर से स्वयं झुक जायगा। कई बार ट्राम में आपके साथ कोई गांधी-भक्त खड़े हो जाते है। इनका शुद्ध खद्दर का लिबास अण्डे की सफेदी को भी शरमाता है। जब इनका कन्धा आपके कन्धे से टकराए तो समझ लीजिए कि आप लुट गए। इनकी गांधी-भक्ति का रहस्य उस समय खुलेगा, जब आप सिगरेट की डिबिया खरीदेंगे और बटुआ जेब से गायब होगा। कुतुब रोड पर भीड़ मे एक मौलाना साहब आपको धक्का देंगे। आप इसे काई महत्त्व नहीं देंगे; परन्तु साहब, यह साधारण घटना नहीं। बस, समझ लीजिए कि आपकी हजामत हो गई।"[227]

"वस्तुत: देखा जाए तो भारत का आध्यापक भी चूँ-चूँ का मुरब्बा है। इस देश में जितनी अधिक संख्या में आध्यापक उत्पन्न होते हैं उतनी मात्रा में कई बार कुली और मजदूर मिलने भी कठिन हो जाते हैं। जिसे देखो मास्तर बन बैठता है।"[228]

"(शरद ऋतु आ जाने पर) राजा (युद्ध के लिए), तपस्वी (तपस्या के लिए), व्यापारी (व्यापार के लिए) और भिक्षुक (माँगने के लिए) वैसे ही निकल पडे हैं जैसे मुरारजी भाई की 'निर्भय बनो' की पुकार सुनकर डाकू (ड़ांका डालने के लिए), सिपाही (शरीफ नागरीक को सताने के लिए) और छात्र (हड़ताल करने के लिए) सक्रिय हो उठे हैं।"[229]

"माफिया का कार्य क्षेत्र विस्तृत होता है। इनसे जो टकराता है वह चूर-चूर हो जाता है। पुलिस इनकी आज्ञाकारिणी दासी होती है। इनसे 'हमप्याला', 'हम निवाला' होती है। पुलिस को इनसे अतिरिक्त वेतन के रूप में लाखों रूपये, प्रतिमास मिलते हैं, इसलिए ये लोग 'पुलिस प्रूफ' होते हैं। "सैयाँ भये कोतलाल, अब डर काहे का"[230]

यहाँ पुलिस-तंत्र में फैले भ्रष्टाचार को व्यंजित किया गया है।

"धोबी के कुत्ते की विशेषता यह होती है कि वह न घर का होता है न घाट का। वह इस घाट से उस घाट डोलता रहता है और हर घाट पर एक धोबी लादी लिए उसकी प्रतीक्षा करता खड़ा मिलता है। स्थिति काफी कुछ आज के औसत आदमी से मिलत-जुलती है।"[231]

"देखिए गाँधी मार्ग सामने से शुरू होता है, वह सामने एक पूंजीपति का पुतला है। पुतले की नाक की सीध में गाधी मार्ग है, जहाँ शराब की आठ दुकानें हैं, उसके बाद गांधीजी का पुतला हे, पुतले के सामने थाना है, पुतले के पीछे मांसाहारी होटेल है वहाँ शराब पीने की उत्तम व्यवस्था है वही गांधी मार्ग समाप्त होता है।"[232]

"सन्तों के मामलों में भी परिभाषा बदल चुकी है। अहिंसा और प्रेम का सन्देश देने वाला सन्त होता था। अब बालात्कार करनेवाला सन्त होता है, बन्दूक बनानेवाला सन्त होता है, दुराचारी सदाचारी होता है, शीलभंग करने वाला शीलवान होता है। 'राम' लड़कियों से छेड़छाड़ करता है।"[233]

ऊपर के उदाहरणों में भी अपकर्षमूलक व्यंग्य की विविध भंगिमाओं को स्पष्ट देखा जा सकता है।

चरित्रगत, व्यक्तिगत तथा परिवेशगत समस्याओं और विसंगतियों को व्यंजित करने के लिए अपकर्ष एक सशक्त शैलीय उपकरण है। जिसके माध्यम से व्यंग्य तीव्र तथा प्रभावशाली बन पाया है।

V) मानवीयकरण

जड़ वस्तुओं पर मानवीय गुणों का आरोप करना मानवीयकरण है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में इसे 'परर्सानिफिकेशन' कहते हैं।

अमूर्त पदार्थों पर मूर्त भावों एवं क्रियाओं का आरोप करना मानवीयकरण कहलाता है। व्यंग्यकार इसके द्वारा बिम्ब प्रस्तुत करता है। अमूर्त अप्रस्तुतों को वो

मानवीय क्रियाओं द्वारा सक्रिय बना देता है और इसके द्वारा उस स्थिति की विसंगति को अप्रस्तुत करता है। व्यंग्य निबंधों में इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार के है :-

"समाजवाद आ गया और बस्ती के बाहर टीले पर खड़ा है। बस्ती के लोग आरती सजाकर उसका स्वागत करने को तैयार खड़े हैं। पर टीले को घेरे खड़े हैं कई तरह के समाजवादी। उनमें से हरेक लोगों को कहकर आया है कि समाजवाद को हाथ पकड़कर में नहीं लाऊंगा। समाजवाद टीले से चिल्लाता है - मुझे बस्ती में ले चलो। ..... बड़ी चर्चा थी समाजवाद आ रहा हे, उसे सब अपनी ओर खींचते है, बेचारा समाजवाद लहू-लूहान हो गया।"[234]

यहाँ 'समाजवाद' का मानवीयकरण करके समाज में व्याप्त विसंगतियों को व्यंजित किया गया है।

"अस्सी-अस्सी साल के बूढे खूँसट, कुरूप, बुझे हुए नेता पार्टियाँ बनाये बैठे हैं। ऐसे में एक सुन्दर जवान स्त्री पार्टी बना ले, तो समझो मरूस्थल में हरियाली आ गयी।"[235]

"थोड़ी देर में आकाश ने मनुष्य के रक्त से धरती की माँग भर दी।"[236]

"वक्तव्यों की झाडुएँ सड़कों पर फिरने लगी। कार्यकर्ताओं ने पंख फड़फड़ायें और वे गाँवों की ओर उड़ चले। रेंगती हुई रिपोर्ट ने राजधानी को घेर लिया और हड़बड़ाकर आदेश निकले। जीपें गुर्रायी।"[237]

"मगर ये हैं कि फाइल बीस बार वापस करेंगे तो हर बार नये मुद्दे पर होगी। इस बीच वह तन्वंगी फाइल गर्भवती महिला की भांति स्वस्थ हो जाती है।"[238]

"हुआ यह कि रात होते ही वह कैनोपी, श्मशान में रोती हुई किसी सद्य: विधवा के समान चीत्कार करने लगी। वह विलाप कर रही थी - "हाय मेरा सुहाग लुट गया। हाय में खाली हो गई, मुझे मेरा पति दो, उसे नहीं लौटा सकते तो कोई और पुरूष दो! मैं अकेली नहीं रह सकती! हाय! मेरी रातें नहीं कटती.....।"[239]

यहाँ कैनोपी का मानवीयकरण करके पाश्चात्य स्त्री के चारित्र को व्यंजित किया गया है।

"गांधीवाद चल निकला। वह चलता-चलता नगर-निगम में घुसा, विधान-सभाओं में घुसा और जाकर लोकसभा में भी बैठ गया।"[240]

"क्या हिन्दुस्तान की धरती इतनी बाँझ हो गई है कि पिछले बीस बरसों में एक भी आवाज़ लता मंगेशकर की स्वरमाधुरी को चुनौती देती हुई जन्म नहीं ले सकी?"[241]

"इस प्रगति में कमल आवाज देता है, 'अनाज, तुम कहाँ हो?' अनाज कहता है, 'मैं यहाँ हूँ, यहाँ इस ऊँचे दाम पर।' 'अरे, तुम पहले ही ऊँचे दाम पर थे, अब और ऊँचे पहुँच गए?' कमल की इस बात पर अनाज कहता है, 'मैं क्या जवाब दूँ इसका उस तोंदवाले दुकानदार से पूछो, अपने उस नेता से पूछो जिसको तुमने वोट दिया है।"[242]

यहाँ अनाज का मानवीयरण करके महँगाई जैसी समस्या पर व्यंग्य किया गया है।

"राजाराम का कहना है कि क्रिकेट, फिल्म और अब टीवी के कारण भाषण मर रहे हैं। मरते हुए इन भाषणों को चुटकुलों के इंजेकशनों से ही बचाया जा सकता है।"[243]

"समाज व्यक्ति पर हावी होकर उसकी कब्र खोदता है। जब किसी अक्लमंद व्यक्ति को मौका मिलता है, तो वह समाज की रूढ़ियों व अंधविश्वासों की कब्र खोद देता है।"[244]

उक्त उदाहरण में वर्तमान समाज में व्याप्त विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"ट्रक ने कार के साथ बालात्कार किया था और कार बुरी तरह उलट गई थी। यही हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यहाँ सुन्दर कारें भारी-भरकम ट्रकों के द्वारा कुचल दी जाती हैं।"[245]

यहाँ परिवाहन-व्यवस्था की अव्यवस्था के कारण रास्ते में वाहनों के बीच हो रहे अकस्मातों की दुर्घटनाओं पर व्यंग्य किया गया है।

"महँगाई कैबरे डांस कर रही है।"[246]

"मैंने लाखों के बोल सहे टिकटरानी तेरे लिए।' प्रेयसी का रूप टिकट ने ले लिया है।"[247]

"कमिशन सिंह प्रायः रिपोर्ट नामक पुत्री को ही जन्म देते रहे हैं।"[248]

"राजनीति रोज कितने रंग दिखाती है, कितने रंग बदलती है, कितने रंगो में गाती है, कितने रंगीन सपने दिखाती है।"[249]

हर समय राजनीति में एक नया परिवर्तना आता रहता है, इसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"रचना ने खीझकर कहा-"क्या यह जरूरी है कि हर रचना को किसी पत्र के माध्यम से आना चाहिए? मैंने तो अनेक रचनाओं को बिना किसी पत्र का हाथ

पकड़े अपने बल पर अपना घर बसाते और सुखी होते देखा है।"[250]

"चंदा स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, वह खाने की तथा पचाने की वस्तु है। कौन कहता है कि वह सुंदर नहीं होता? वह खुशी देता है। किसी के भी जीवन की अंधेरी रात को प्रकाश से भर देता है।"[251]

चंदा का मानवीयकरण करके इसके फायदों को व्यंजित किया गया है।

"यूं तो सभी मोटर गाड़ियाँ पेट्रोल पीती हैं पर सरकारी कारों खासकर मन्त्रियों और साहिबों की कारों का तो हाज़मा कुछ ज़्यादा ही तेज़ होता है। बहुत सारा पेट्रोल गटक जाती है।"[252]

अधिकारियों तथा नेताओं द्वारा सरकारी कारों के अधिक तथा गलत उपयोग पर व्यंग्य किया गया है।

"मैं सरकारी फाइल हूँ। लाल फीते से बँधी लाजवंती नारी की तरह सरकारी दफ्तर की अलमारी में पड़ी, धूल खाती जीवन बिता रही हूँ। मुझे बहुत कम लोगों के हाथ स्पर्श करते हैं। ..... मेरे भीतर पल रही समस्याएँ, लगता है, अनचाहा गर्भ हो गयी हैं, एक-दो या तीन या पूरे नौ महिने के बाद भी मैं किसी हल को जन्म नहीं दे सकती। मेरी कोख में छटपटाते समस्याओं के जुडवां शिशु तब तक बाहर नहीं आते, जब तक मेरे बाबू-स्वामी की जैब में लक्ष्मी का अवैध प्रवेश नहीं हो जाता।"[253]

फाइलों को वाचा देकर प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को उजागर किया है।

व्यंग्य निबंधों में विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार करने के लिए मानवीयकरण एक सशक्त शैलीय उपकरण सिद्ध हुआ है।

vi) उत्प्रेक्षा

जहाँ उपमेय में उपमान की कल्पना की जाय अथवा संभावना प्रस्तुत दिखाई दे वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा के द्वारा भी विसगतियों का व्यंग्यात्मक निरूपण तथा प्रहार किया गया है। जैसे-

"विधायक ने दुसरा कप बुला लिया। गरम चाय को तीन घूँट में निगलकर कप रख दिया। कप को इस तरह देखता रहा, जैसे सरकार गिरा दी हो।"[254]

यहाँ राजनीतिक विसंगती को व्यंजित किया गया है।

"कल एक के घर चाय पी रहा था, तो लग रहा था, जैसे मृत्यु-भोज मे

शरीक हूँ।"[255]

"देखो, सूर्य बादलों में ऐसा छिप गया है जैसे नयी और पुरानी कहानी के विवाद के घाटकोप में अच्छा लेखक छिप गया हो।"[256]

"वह ऐसे तना खड़ा है क्रोध मे घूरता है कि जैसे पूरी मजदूरी नहीं मिलने पर बदतमीज कुली तने हुए देखता है।"[257]

"कुछ सखियाँ वगैरह तो नायिकाओं के शरीर की सुगन्ध की डोर से बँधी-बँधी इनके पीछे इस तरह घिसटती चली जाती थी जैसे कि इंजन के पीछे डिब्बे जाते हैं।"[258]

"हजरतगंज का बाज़ार काफी आधुनिक हो रहा था। पर यह आधुनिकता वैसी ही थी जैसी आज की कुछ कहानियों में केवल ईसाई लड़कियों को हीरोइन बनाकर पैदा की जाती है।"[259]

लधुमती कोम की लड़कियों को लालच देकर हिरोइन बनाते हैं। इसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"आप की नाक तो देखो, लगता है जैसे चहरे पर छिपकली चिपकी हैं।"[260]

"गाड़ी जाने को तैयार होती है तो गार्ड खोजना वैसा ही कठिन काम है जैसे डाकुओं के आ जाने पर भारतीय पुलिस को खोज जाना।"[261]

यहाँ प्रशासनिक क्षेत्रों में कर्मचारियों की लापरवाही तथा कामचोरी पर व्यंग्य किया गया है।

"मैं बड़ा बरखुरदार किस्म का पति हूँ। पत्नी की कहीं हुई बात वैसे ही याद रखता हूँ, जैसे बंदर अपने नचानेवाले के आदेश याद रखता है।"[262]

पत्नी से डरनेवाले तथा उसके इशारों पर नाचनेवाले पति की स्थिति को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"मेरी शांति को भंग कर टेलीफोन की घंटी मुझ पर किसी खलनायक के बाप की तरह अट्टहास कर उठी। मानो कह रही है - "मुझे तो कमरे में बंद कर रखा है और आप स्वयं चांदनी का मजा लूट रहे हो।"[263]

"घर पहुंचने पर दोनों पैरों को जूते की कैद से आजाद किया तो ऐसे लगा जैसे कोई नन्हीं चिड़िया बाज के पंजों से छुटकारा पा गई हो या कोई हिरन किसी-न-किसी तरह भयानक अजगर की जकड़ से भाग निकला हो!"[264]

"उस दिन राधेलाल के घर गया तो वह मानवीय मूल्यों सी टूटी-फूटी चारपाई पर, दोनों हाथों में सिर दिए ऐसे सुशोभित हो रहा था जैसे पार्टी से

निष्कासित होने पर कोई नेता अथवा भ्रष्टाचार-विभाग में तबादले पर भेजा गया भ्रष्ट शिरोमणि अफसर होता है। [265]

"स्कैम-कांड में 'डीलक्स' दलालों ने करोड़ों ऐसे डकारे हैं, जैसे बच्चे 'लेमचूस' की गोली चूस जाते हैं।"[266]

यहाँ उत्प्रेक्षा द्वारा भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

"बहरहाल, 'मूँड मुँडाते ही ओले पड़े' कहावत चरितार्थ हुई और हम पर जुकाम वैसे ही सवार हो गया जैसे इस बार चुनावों में विपक्ष पर संकोच सवार हो गयी थी।"[267]

"सामने क्षितिज तक फैली सड़क ऐसी प्रतीत होती थी जैसे किसी युवती की मांग में भरी कुंकुम की रेखा हो। लेकिन कभी वह ऐसी लगती जैसे ट्रकों के भार से दबकर धरती ने अपनी जीभ निकाल दी हो।"[268]

"अब तो उनके संयम का बांध इस कदर टूटा जैसे किसी पक्के इंजीनियर द्वारा बनाया गया कच्चा बांध टूट जाये, और उन्होंने मुझे डाटते हुए कहा - "यहाँ पर रेल की नहीं, चुनाव में खड़े होने के टिकट मिलते हैं।"[269]

यहाँ समाज में फैली आंतरिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

व्यंग्य निबंधों में उत्प्रेक्षा का प्रयोग व्यंग्य को प्रभावशाली तथा प्रहारात्मक बनाता है।

अतः यह निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अप्रस्तुत विधान के विविध रूपों के द्वारा अवश्य ही हिन्दी व्यंग्य निबंध अपनी आकर्षक और प्रभावोत्पादक छवियों को प्राप्त कर सका है। इस प्रयोग के कारण व्यंग्य भाषा सटीक और सशक्त हो पाई है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1) रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्मक शैलीविज्ञान, पृ-58.

2) भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ-88.

3) परसाई रचनावली भाग-4, हास्यास्पद अच्छी बात, पृ-40.

4) वही, 'नफरत की राजनीति' पृ-93.

5) वही, 'बिना माएण्ड के लाइकमाइण्डेड' पृ-195.

6) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-58, 'शांतता, चिन्तन चालू आहे!'

7) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोक-शभा, पृ-64. 'मिश्र-बन्धुओं का युग'.

8) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-101, 'एक मुकदमा'.

9) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-15, 'अपन तो लेखक हैं;.

10) वही, पृ-123, 124, 'हुकुम करो मालिक'.

11) नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-44.

12) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-114, 'स्मार्टनेस का मूल्य'.

13) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-109,'मंच'.

14) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-14.

15) संसारचन्द्र, महा मूर्ख मंण्डल, पृ-56, 'शिकायतनामा बनाम रांझा'.

16) वही, पृ-66, 'किस्सा सेहरे का'.

17) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-43, 'जल्दबाजी'

18) वही, पृ-71, 'हाज़िर जवाबी'

19) आत्मानन्द मिश्र, बात का बतंगड़ (1970), पृ-105.

20) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-39, 'मृच्छ कटिकम् उर्फ मिट्टी की गाड़ी'

21) वही, पृ-112, 'मैं धृतराष्ट्र उर्फ सौ लड़के पैदा कर लूँ तब बात करना'

22) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ-96, 'अन्तर्देशीय पत्र, गोंद और चिपकना'

23) वही, पृ-113, 'कल के गद्दीधारी बने आज वैरागी'

24) वही, 'द' से दलाल, पृ-67, 'पद की महिमा बखानी न जाए.....'

25) श्यामसुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ-18, 'हजामत'

26) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-29, 'आदत क्यू में खड़े होने की'

27) विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमें छक्का, पृ-26, 'घुसपैठ'

28) उमाशंकर चतुर्वेदी, तोप और तोपचंद, पृ-118, 'न कहो न सुनो'

29) आत्माराम, जब में लिखता हूँ, पृ-23-24, 'नमस्ते'

30) अमरेन्द्र कुमार, दूसरों के जरिये, पृ-21, 'स्कूटरवालों अब सावधान!'

31) हरिशंकर परसाई, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृ-103

32) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-247, 'राष्ट्रसंघ के इन भुक्खड़ सदस्यों को भगा दो'

33) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ–10, 'शिकायत मुझे भी है'
34) शरद जोशी, यथासंभव, पृ–398, 'महँगाई और समाजवाद'
35) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ–131, 'अपने अदमियों पर'
36) अमृत राय, विजिट इण्डिया, पृ–95, 'एक लाल झंडी खतरे की'
37) शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ–54, 'चेला महात्म्य'
38) सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ–10
39) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती? पृ–23-24, 'धोबी के कुत्ते'
40) बालेन्दुशेखर तिवारी, गोपनीय गृह उद्योग, पृ– 16
41) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ–22, 'गैस' करना गैस-रिसाव के बारे में'
42) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ–89, 'मृत्यु: एक दिग्दार्शनिक निबन्ध'
43) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ–19, 'वुल्फ से सब डरते हैं'
44) शरद जोशी, यथासंभव, पृ–48, 'जीप पर सवार इल्लियाँ'
45) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ–31, 'सरकार का जादू'
46) लतीफ घोंघी, बुद्धिमानों से बचिये, पृ–78, 'गाय पर व्यंग्य लिखो'
47) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ–67, 'दो सौ रूपए किलो'
48) शरद जोशी, यथासंभव, पृ–395, दीवाली फिर आयी
49) श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ–13
50) लतीफ घोंघी, ज्ञान की दुकान, पृ–42-43, 'कश्मीर से कन्याकुमारी तक'
51) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ–25, 'संकट और संस्कृति'
52) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ–95, 'एक झंडी खतरे की'
53) शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ–122, 'वार्डरोब'
54) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ–14
55) सुदर्शन मजीठिया, अस्मिता का चंदन, पृ–80.
56) प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ–35
57) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती? पृ–14, 'शर्म मुझको मगर क्यों आती?'
58) वही, पृ–19, 'सो कर पाने का सुख'

59) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगने वाले, पृ-78
60) बरसानेलाल चतुर्वेदी, भोला पंडित की बैठक, पृ-30
61) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगें, पृ-99, 'हडप्पन सभ्यता'
62) वही, हम सब एक है, पृ-47, 'अस्पताल दर्द'
63) वही, अथ व्यंग्यम्, पृ-15, 'अभिवादन'
64) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-13/14, 'सावधान, यह आम रास्ता नहीं है!'
65) विश्वमोहन माथुर, क्षमायाचना सहित, पृ-39, 'रंगरेजन भई रे उमरिया'
66) आत्माराम, जब मैं लिखता हूँ, पृ-31, 'लाभ और हानियाँ'
67) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-59, 'रहीम के दोहे का अर्थ'
68) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-65, 'जाकी रही भावना जैसी'
69) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-382, 'सन्देश बो दिये गये!'
70) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-22 / 23, 'वह जो आदमी है न'
71) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-61, 'डिब्बे में बैठे लोग'
72) रवीन्द्रनाथ त्यागी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-128, 129, 'आत्महत्या - उसके पहले और बाद'
73) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-11, 'जगाने का अपराध'
74) वही, पृ-144, 'खबरे हमारी और उनकी'
75) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-35, 'एक प्रयोगशाला की यात्रा'
76) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-148, 'वे हमारे पास में रहने वाले'
77) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-81, 82, 'बयान जारी है'
78) प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-146, 147
79) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-33-34, 'चौक्कै और छक्के का चक्कर'
80) रोशनलाल शुरीरवाला, मूर्ख शिरोमणि, पृ-56, 'झूठवादी ताऊजी'
81) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-118, 'फ्लोप होना जन

संपर्क सभा का'

82) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-43, 'मजहब नहीं सिखाता'

83) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-112, 'झूठ सत्य के वेश में'

84) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-26, 'आदत-क्यू में खड़े होने की'

85) वही पृ-98-99, 'ससुराल का कमाल'

86) विश्वेन्द्र महेता, मारने दो हमे छक्का, पृ-67, 'मू.......ड़'

87) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो !, पृ-11, 'अवसरवादी बनो !'

88) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-22, 23, वह जो आदमी है न'

89) वही, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृ-32,33

90) वही, पगडण्डियों का जमाना, पृ-111

91) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ-32, 'सरकार का जादू'

92) वही, पृ-37, वही

93) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-155, 'संस्कृत साहित्य में नारी : एक शोध-प्रबंध'

94) लतीफ घोंघी, मुर्गी चोर की कथा, पृ-108, 109, 'इस चुनाव में मास्साब का शब्दकोश'

95) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-37, 'दीनइलाही'

96) शंकर पुणताम्बेकर, दुर्घटना से दुर्घटना तक, पृ-32, 'कितने नाकों पर कितनी बार'

97) सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डंड़ा, पृ-50

98) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-21, 'गैस' करना गैस-रिसाव के बारे में'

99) लतीफ घोंघी, मुर्गी चोर की कथा, पृ-110

100) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-55, 'मास्टरजी'

101) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-37, 'गोरी हैं कलाइयाँ ....

102) अलका पाठक, गार्ड रक्षित दफ्तरे, पृ-101, 'दे, उपहार दे !'

103) वही, पृ-13, अनार के बहाने

104) निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-89, 'दु:खीराम और देशी पामेरियन'
105) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-141, 'असिस्डेण्ड लोकनायक'
106) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-115, 'होना कुछ नहीं का'
107) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-254, 'मृत्युबोध के कुछ और क्षण'
108) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-32, 'एक खानदानी नौजवान'
109) लतीफ घोंघी, व्यंग्य चरितम्, पृ-27
110) वही, पृ-94
111) वही, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ-12, 'हुकुम करो मालिक'
112) नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-52
113) वही, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-78, 'साहित्य के मुजाविर'
114) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-123, 'क्विट इन्डिया उर्फ आओ, फोरेन चलें'
115) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-87, 'शॉपिंग का शौक'
116) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की ड़ायरी, पृ-17, 'किस्से जँवाईलालों के'
117) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-191, 'जागा रे जागा, कस्बा अभागा'
118) के. पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-65, 'संगीत का पाप उर्फ पाप संगीत'
119) वही, पृ-100, 'कृपया परे रहिए!..... मैं मछली हूँ!'
120) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-25, 'बजट को साष्टांग दंडवत'
121) निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-37, 'जरूरत जूता क्रांति की'
122) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-192, 'लोह-पुरूष और मोम-पुरूष'
123) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ, पृ-34
124) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-24, 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे'
125) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-262, 'स्ट्राइक'
126) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-102, 'एक मुकदमा'
127) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-119

128) संसारचंन्द्र, सोने के दाँत, पृ-92, झूठ
129) ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ-49, 'सती प्रथा के पक्ष में'
130) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-48
131) उमाशंकर चतुर्वेदी, तोप और तोपचंद, पृ-130, 'अपने-अपने रावण'
132) श्रीकांत मित्तल, मुनसपलटी, दृष्टव्यः श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य निबंध (प्रथम संस्करण / 1981) संपादक - काका हाथरसी गिरिराज शरण अग्रवाल
133) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-349, '15 अगष्ट को' (प्रहरी, 22 अगष्ट, 1954)
134) वही, पृ-108, 'तुसी हुकुम करो जी'
135) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियाँ, पृ-29
136) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-91, 'कबूतर'
137) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-41, 'मृच्छकटिकम् उर्फ मिट्टी की गाड़ी'
138) मधुसूदन पाटिल, अथ व्यंग्यम्, पृ-43
139) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-16, 17, 'मुफ़्त का गिलास'
140) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-141, 'असिस्टेण्ड लोकनायक'
141) वही, पृ-76, 'एक मादा-दूसरी कुड़ी'
142) परसाई, अपनी अपनी बीमारी, पृ-62
143) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-17, 'भैसन्हि माँह रहत नित बकुला'
144) वही, पृ-22, 'जैसे श्वान काँच मन्दिर में'
145) वही, पृ-68, 'मनीप्लान्ट और कैक्टस'
146) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, पृ-31, 'महीनों में महीना मार्च का'
147) रवीन्द्रनाथ त्यागी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-1, 'बात में से बात में से बात'
148) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-20, 'एक हारे हुए नेता का इन्टरव्यू'
149) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-14
150) वही, पृ-23
151) वही, पृ-87

152) नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-20
153) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-73, 'अकाल पीड़ित देश और दूध का मेंढ़क'.
154) वही, पृ-146, 'चांदी की दीवार और निर्धन'
155) वही, पृ-33, 'रिसर्च एक्सपीरियन्स'
156) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-34, 'हिरोइन की तलाश में'
157) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-72, 'मेरा परिचय'
158) सुदर्शन मजीठिया, टेलिफोन की घण्टी से, पृ-47
159) वही, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ-35
160) वही, डिस्को कल्चर, पृ-125
161) प्रेम जनमेजय, राजधानी में गंवार, पृ-21
162) संसारचन्द्र, महामुर्ख मंडल, पृ-14, 'चुनौतियों के बीच'
163) वही, पृ-15, 'महामुर्ख मंडल'
164) वही, पृ-18, 'अवकाश-प्राप्ति के अवसर पर'
165) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-27, 'बादलों के पार पहली बार'
166) अमृतराय, विजिट इन्टिया, पृ-43, 'मृच्छकटिकम् उर्फ मिट्टी की गाडी'
167) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-38, 'राधेलाल की उदासी'
168) वही, पृ-66, 'बजट का ऊँट और मनमोहन की पिचकारी'
169) रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणं गच्छामि, पृ-9
170) वही, भिश्ती और भस्मासुर, पृ-10
171) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-57, 'फेबीकोल तथा चौबेजी'
172) वही, पृ-89, 'चुनाव टिकट और मिट्टी का तेल'
173) मधुसुदन पाटिल, हम सब एक है, पृ-46
174) वही, अथ व्यंग्यम्, पृ-43
175) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-42, 'उन्नत खेती और अनुदास का बैल'

176) श्याम सुन्दर घोष, 'खिन खारा, खिन मीठा', पृ–30, 'भाषण'
177) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ–21, 'आजादी–चिंतन'
178) गोपाल चतुर्वेदी, खंभो के खेल, पृ–25, 'चुल्लू–भर पानी की तलाश'
179) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ–9, 'व्रत–कथाओं की शल्य क्रिया'
180) अमरेन्द्रकुमार, दूसरों के जरिये, पृ–56, 'नेताजी तैयारी कर रहे हैं'
181) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी हैं, पृ–61, 'कर कमल हो गये'
182) शरद जोशी, यथासंभव, पृ–69, 'मनीप्लान्ट' और 'कैक्टस'
183) हरिशंकर परसाई, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृ–115
184) शरद जोशी, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, पृ–57, 'समस्याग्रस्त वर्तमान और ००० का बड़ा वृक्ष'
185) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, पृ–28, 'अ–डाकुओं का आत्म–समर्पण'
186) रवीन्द्रनाथ त्यागी, देवदार का पेड़, पृ–53
187) नरेन्द्र कोहली, आधुनिक लड़की की पीड़ा, पृ–75
188) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ– 18, 'दीन इलाही'
189) सुदर्शन मजीठिया, इंडीकेट बनाम सिंडीकेट, पृ–84,
190) सुदर्शन मजीठिया, डिस्को कल्चर, पृ–98
191) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरों से, पृ–54, 'नेता की सेहत के लिए भाषण'
192) संसारचन्द्र, महामूर्ख मण्डल, पृ–78, 'मेरा अपना रेखाचित्र'
193) रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणं गच्छामि, पृ–33
194) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ–95, 'हे वोटर भगवान'
195) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ–127, 'उतरना मालिक बनकर सेवा के रंगमंच पर'
196) श्याम सुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ–103, 'पैपर–वेट का जीवन–दर्शन'
197) श्रीकांत मित्तल, मुनसपल्टी, दृष्टव्यः श्रेष्ठ हास्य–व्यंग्य निबंध, संपादक–

काका हाथरसी, गिरिराज शरण अग्रवाल, पृ-141

198) दृष्टव्य: आशा पाण्डे, हिन्दी व्यंग्य साहित्य की भाषा, पृ-126

199) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-206, 'बाजार भाव पति का' (करण्ट, 27 मार्च, 1982)

200) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-19, 'वह जो आदमी है न'

201) वही, 21

202) शरद जोशी, यथासम्भव, पृ-404, 'मैं ओलम्पिक नहीं गया'

203) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-111, 'एक दिक्षान्त भाषण'

204) वही, पृ-239, 'शोक-सभा'

205) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-53, 'गर्दभ-गरिमा'

206) लतीफ घोंघी, बीमार न होने का दु:ख, पृ-80

207) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-123, 'एक और लाल तिकोन'

208) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-123, वार्ड. नं. 27 का मरीज'

209) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-40

210) वही, डिस्को कल्चर, पृ-151

211) वही, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ-46

212) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-51, 'नए-बजट-प्रस्ताव'

213) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-48, 'गधाजी, उल्लूजी और चुनाव-चिहनजी'

214) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-48, 'स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी; अस्वास्थ्य उत्तरोत्तरी'

215) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-79, 'राष्ट्र के समय प्रहरी'

216) वीरेन्द्र मेहदीरत्ता, आधुनिक हिन्दी साहित्यमें व्यंग्य, पृ-19

217) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ-54, परमात्मा का लोटा

218) परसाई, सदाचार का तावीज, पृ-44

219) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-29, 'संत सीकरी में बड़े व्यस्त है'

220) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-277, 'विविध प्रसंग'

221) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, पृ–49, 'अपना देश: चिन्तन के कुछ क्षण'
222) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं, पृ–83, 'एक धार्मिक बस की कथा'
223) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ–88, 'कैनोपी का स्वयंवर'
224) शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ–100, 'बड़ा नगर एक पहचान'
225) सुदर्शन मजीठिया, अस्मिता का चंदन, पृ–138,
226) वही, पृ–85
227) संसारचन्द्र, सोने के दांत, पृ–29, 'यह दिल्ली है'
228) वही, पृ–56, 'मास्टरजी'
229) रोशनलाल सुरीरवाला, भिश्त और भस्मासुर, पृ–55
230) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ–64, 'माफिया–मीमांसा'
231) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ–132, 'दो शब्द: पड़ोसियों के कुत्तों पर'
232) नीरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ–70, 'तलाश पद चिन्हों की'
233) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ–54, 'बदलती जा रही हे मान्यताएँ'
234) हरिशंकर परसाई, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, पृ–47
235) परसाई रचनावली भाग–4, पृ–213, 'विचारमंच'
236) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी है, पृ–12, 'शिकायत मुझे भी है'
237) शरद जोशी, मेरी व्यंग्य रचनाएं, पृ–108
238) रवीन्द्रनाथ त्यागी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ–107, 'एक फाइल का सफर'
239) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ–84, 'कैनोपी का स्वयंवर'
240) वही, P-91, 'कबूतर'
241) केशवचन्द्र वर्मा, ज्यादातर गलत, पृ–118, 'फिल्मी गानों की एक और दुनिया'
242) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ–66, 'दो सौ रूपए किलो'
243) वही, पृ–99, 'भाषण की तैयारी'
244) सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डंडा, पृ–31
245) सुबोधकुमार श्रीवास्तव, शहर बंद क्यों है, पृ–74

246) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ्तखोरों से, पृ-87, 'रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब खून'
247) वही, पृ-89, चुनाव-टिकट और मिट्टी का तेल
248) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-36, 'बहार कमीशनों की'
249) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-39, 'लवली मौसम'
250) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-77, 'जब रचना बोली'
251) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-67, 'चंदा देश पिया के जा'
252) रूपनारायण शर्मा, साहिब बाथरूम में है, पृ-21, 'पेट्रोल बचाओ अभियान'
253) गिरीश पंकज, 'भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-17. 'सरकारी फाइल की आत्मकथा'
254) परसाई रचनावली भाग-4, पृ-174, 'कैण्टीन में विधायक'
255) हरिशंकर परसाई, शिकायत मुझे भी, पृ-56, 'गुड़ की चाय'
256) वही, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-18, 'आई बरखा'
257) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-69, 'मनीप्लान्ट' और 'कैक्टस'
258) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-51, 'एक पुराने जमाने की नायिका'
259) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-12, 'लखनऊ'
260) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-30
261) नरेन्द्र कोहली, एक और लाल तिकोन, पृ-23
262) वही, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, पृ-134, 'रिसर्च-एक्सपीरिएन्स'
263) सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-19, 20
264) संसारचन्द्र, सोने का दाँत, पृ-14, 'ए-वन जूता'
265) प्रेम जनमेजय, शर्म मुझको मगर क्यों आती?, पृ-9, 'सुंदरता खरीदो, सुंदरता बेचो'
266) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-58
267) वही, चौबेजी की डायरी, पृ-58, 'भीष्म प्रतिज्ञा 'स्मार्ट बनने की'
268) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-45, 'बस का एक दिलचस्प साथी'
269) वही, पृ-83, 'क्यू' के चक्रव्यूह में'